हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार 16 मार्च 2025

12 बुद्धोमाता मंदिर के नजदीक कबाड़ के गोदाम आग भड़की

12 घर के भेदी ने रचा था लूट का षड्यंत्र

कॉम्पीटिशन मतलब संस्कारम

IIT-JEE Advanced Selections

India's Most Trusted School for Integrated Classroom Programme for Selection in

IIT-JEE, NEET, NDA, MNS, SSC, CUET, CLAT, CA, CS, ICMAI

2025-26 ADMISSION OPEN

99.99 %ile Selection in IIT (BHU) Varanasi

Dishant S/O Mr. Devender
Village - Paharipur

99.96 %ile Selection in IIT Guwahati

Chirag S/O Mr. Satender
Village - Paharipur

JEE Main (Session-1) Result -2025

99.98 %ile Physics | 98.54 %ile Physics | 98.59 %ile Maths | 98.7 %ile Maths | 96.13 %ile Maths | 94.81 %ile Maths

Shubham S/o Kailash
Vill : Dubladhan

Samir S/o Dharambir
Hansi, Hisar

Tanishk S/o Naresh
Charkhi Dadri

Shubham S/o Ranbir
Vill : Kheri Khummar

Akshit S/o Amarjeet
Jhajjar

Arpit S/o Amarjeet
Baghpur

Scholarship Test : Date - 16 March 2025 / Time : 10:00 AM Onwards / Venue : Khatiwas & Patauda Campus

98.85 %ile — SHIVAM S/o JOGINDER, SEKHUPUR
98.17 %ile — YOGESH S/o RAJKUMAR, MANGAWAS
97.90 %ile — VIVEK S/o BASANT, SIWANA
97.51 %ile — NIKKI D/o SURENDER, JONDHI
97.40 %ile — VAIBHAV S/o AMIT, JHAJJAR
97.40 %ile — RITIK S/o KARTAR, SERIA
97 %ile — MUSKAN D/o SHYAMLAL, JHAJJAR
96.56 %ile — JATIN S/o VINEET, JHAJJAR

NEET Selections-2024

AC Hostel Facility For Boys & Girls

KHUSHI D/o PAWAN DHAKLA — Selection in MBBS — AIIMS Jodhpur

CHARU D/o SATISH MASUDPUR — Selection in MBBS — PGIMS Rohtak

ANJALI D/o VIKASH CHAMANPURA — Selection in MBBS — ESIC Faridabad

YASH S/o OM PRAKASH JHAJAJR — Selection in MBBS — PGIMS Rohtak

SHAKSHI D/o DEVENDER KHERI KHUMMAR — Selection in MBBS — PGIMS Rohtak

KAJAL D/o RAKESH MAJRA

DIKSHU S/o SURENDER DUBALDHAN

KAJAL D/o SANJAY GUDHA

VAIBHAV S/o AMIT JHAJJAR

HIREN S/o SANDEEP BHADANI

TANNU D/o DEVENDER JHAJJAR

RASHMI D/o SATBIR JHAJJAR

NDA Qualifiers 2024

AMAN S/o JITENDER DUBALDHAN

ANSHU S/o SURESH DIGHAL

ANUJ S/o VIKASH JHAJJAR

SACHIN S/o JEET SINGH JHAJJAR

NIKKI D/o SURENDER JONDHI

AMAN S/o MANJEET NAGAWA

BHAVYA S/o AJMER KABLANA

VISHAL S/o KULDEEP KHERI HOSYARPUR

DEEPANSHU S/o DHEERAJ KHERI KHUMMAR

TUSHAR S/o DHARAMBIR SEKHUPUR JAT

SHIVAM S/o JOGINDER SEKHUPUR JAT

VIVEK S/o BASANT SIWANA

SAKSHI D/o NAVEEN BARHANA

LAKSHAY S/o AJAY SII ANA

MUSKAN D/o GOVIND KOELPUR

SAMEER S/o DHARAMBIR JHAJJAR

DINESH S/o SANJAY BHAPRODA

JIVESH S/o SONU BHAPRODA

SAHIL S/o SANDEEP SIWANA

SHUBHAM S/o RANBIR KHERI KHUMMAR

SHUBHAM S/o KAILASH DUBALDHAN

KAUSHAL S/o JOGENDER DADANPUR

SITANSHU S/o HARIKISHAN SURAJGARH

BOARD Results 2024

CBSE CLASS XII Topper 99 %
RITIKA D/o DEVENDER JHAJJAR

CBSE CLASS X Topper 98.2 %
KANIKA D/o BALWAN KHERI KHUMMAR

CBSE CLASS X Topper 98.2 %
CHIRAG S/o RAMBIR CHIMNI

CA/CS Qualifers 2024

MITAKSHI D/o VINAY MALIKPUR

KANIKA D/o ASHOK AURANGPUR

KHUSHI D/o BHARAMJEET AURANGPUR

AAKASH S/o RAJPAL REWARI KHERA

DIYA D/o SANDEEP KHATIWAS

CLAT Qualifers 2024

CHARVI D/o VINOD KHATIWAS

YASHASWI D/o VIKRANT JHAJJAR

CHAAVI D/o RISHIPAL BERI

VAIBHAV S/o DEV JHAJJAR

ALKA D/o JAIBIR MAJRA D.

MANSI D/o RAJIV MATANHAIL

RITIKA D/o SATYAPL JHINJHAR

RASHI D/o RAJENDER JHINJHAR

AKANSHA D/o RAJESH MATANHAIL

PRIYANKA D/o SURESH DUBALDHAN

MANISH S/o RAJESH DUBALDHAN

HARSHITA D/o PAWAN JHAJJAR

SANSKARAM GROUP OF SCHOOLS

THE TIMES OF INDIA — Awarded with Times School Survey award 2025-26

JHAJJAR CAMPUS : CALL : 8222889860, 8222889862
NH.334B, Main Dadri Road, Khatiwas, Jhajjar (Haryana)
PATAUDA CAMPUS : CALL : 9053007801,9053007802
NH.71, Patauda, Near Kulana, Jhajjar (Haryana)

खबर संक्षेप

मेहंदीपुर डाबोदा कलां में प्रतियोगिता 21 मार्च से

बहादुरगढ़। हरियाणा फुटबॉल एसोसिएशन की ओर से चार दिवसीय सीनियर स्टेट वुमन फुटबॉल चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है। मेहंदीपुर डाबोदा कलां में यह प्रतियोगिता 21 मार्च से शुरू होगी। चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए जिला झज्जर की सीनियर महिला फुटबॉल टीम की ट्रायल का आयोजन बादली के फुटबॉल मैदान पर 16 मार्च को होगा। झज्जर फुटबॉल एसोसिएशन के सचिव अशोक गुलिया ने बताया कि ट्रायल में भाग लेने के लिए प्रतिभागी का जिला झज्जर का स्थाई निवासी होना जरूरी है। सभी खिलाड़ियों का ट्रायल पर दो आईडी साथ लाना अनिवार्य है।

आंगनवाड़ी केंद्र से गैस सिलेंडर व सामान चोरी

झज्जर। क्षेत्र के गांव भूरावास के आंगनवाड़ी केंद्र में चोरी होने का मामला सामने आया है। पुलिस को दी शिकायत में भूरावास निवासी बबली देवी ने बताया कि वह आंगनवाड़ी वर्कर्स के रूप में कार्यरत है। उसे चौदह मार्च को पता चला कि आंगनवाड़ी केंद्र में चोरी हो गई है। जब उसने सेंटर पहुंच कर देखा तो वहां का ताला गायब था तथा अंदर रखा एक गैस सिलेंडर व चॉकलेट का डब्बा चोरी हो या। इस संबंध में उसने अपने स्तर पर पता करने का प्रयास भी किया लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

सैनी ने दी विज को जन्मदिन की बधाई

बहादुरगढ़। ग्रीवेंस कमेटी मेंबर जसबीर सैनी ने केबिनेट मंत्री अनिल विज के जन्मदिन पर उनके अम्बाला कैंट स्थित निवास पर जाकर बधाई दी। अनिल का सातवीं बार विधायक बनना उनकी लोकप्रियता को दर्शाता है। वे जमीन से जुड़े नेता हैं और हमेशा लोगों के बीच रहकर उनकी समस्याओं का समाधान करते हैं। सरपंच सोनू, मोंटी, राजपाल सैनी, अतरे मिस्त्री, कृष्ण, नीरज व हरीश आदि ने भी अनिल को जन्मदिन की बधाई दी।

मंदिर में उमड़ा आस्था का सैलाब, सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने टेका माथा

- श्रद्धालुओं ने पंखें चढ़ा कर की परिवार की सुख समृद्धि की कामना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। बाबा प्रसाद गिरी मंदिर में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, कार्यक्रम के दौरान उपस्थित महंत परमानंद गिरी महाराज एवं अन्य संत, बाबा की समाधि पर पंखा चढ़ाते हुए श्रद्धालु। फोटो :हरिभूमि

शुक्रवार को दुल्हेंडी पर्व पर नगर खेड़ा बाबा प्रसाद गिरी मंदिर में आस्था का सैलाब उमड़ा। सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु अपने परिवार सहित बाबा के दर्शनों के लिए पहुंचे।

बाबा के सजे भव्य दरबार को देखकर श्रद्धालु गदगद हो गए और बाबा के भजनों पर खूब झूमते दिखाई दिए। श्रद्धालु पंकज शर्मा, प्रमोद बंसल, वेद बहल पाशु, मुकेश सोलंकी, आशीष पोपली ने बताया कि बाबा की महिमा अपरंपार है। सच्चे मन से जो बाबा की भक्ति करता है, बाबा सदा उनकी रक्षा करता है और परिवार में सुख समृद्धि देता है। उन्होंने बताया कि मंदिर में आने पर जहां मन में शांति मिलती है, वहीं असीम आनंद भी अनुभूति होती है। बाबा के भजन सुनकर भाव विभोर हुए श्रद्धालुः शुक्रवार सुबह से ही श्रद्धालु मंदिर परिसर में पहुंचना शुरू हो गए। पंखा चढ़ाने व बाबा के दर्शन का सिलसिला देर रात करीब दस बजे तक चलता रहा।

इस मौके पर भक्ति संगीत कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। जिसमें गायकों ने मेला बाबा का लगता है हर साल .., बाबा की कृपा जिसपर हो जाए भक्ति को पाए मौज उड़ाए, बाबा की चौखट पे झुकता जमाना भजनों पर श्रद्धालु भाव विभोर हो गए और अपने आपको नाचने से नहीं रोक सके। देर सांय तक श्रद्धालु बाबा के भजनों पर झूमते रहे।

पंखें चढ़ाने की है अनोखी परपंरा

बता दें कि दुल्हेंडी के दिन बाबा प्रसाद गिरी की समाधि पर पंखे चढ़ाने की अनोखी परपंरा है। मनोकामना पूर्ण होने पर प्रतिवर्ष बाबा की समाधि पर सैंकड़ों श्रद्धालुओं द्वारा पंखे चढ़ाए जाते हैं। पहले जहां चमकीले कागज, गत्ते व कपड़े की कारीगरी के आकर्षक पंखे चढ़ाए जाते थे, वहीं समय में आए बदलाव के साथ ही अब बिजली के पंखों ने इनका स्थान ले लिया है। पिछले कुछ वर्षों से श्रद्धालुओं द्वारा सीलिंग फेन, कूलर, एसी चढ़ाने का सिलसिला चल पड़ा है।

पूरी तरह व्यवस्थित रहा मंदिर परिसर

मंदिर परिसर में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी तरह की परेशानी ना हो, इसके लिए मंदिर कमेटी के स्तर पर पुख्ता इंतजाम किए गए। बाबा की समाधि तक जाने के लिए बेरिगेट्स लगाए गए, जिससे श्रद्धालुओं ने बिना परेशानी के दर्शन किए। पुलिस के स्तर पर भी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए। मंदिर परिसर के भीतर और बाहर पुलिस के जवान तैनात रहे।

बहादुरगढ़ में खूब उड़ा गुलाल, रंगीन हुआ माहौल

पारंपरिक रूप से मनाया रंगोत्सव, क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट ने मिट्टी में खेली होली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। मिट्टी में होली खेलते क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट के सदस्य, देवीलाल पार्क में होली खेलते भाजपा व संघ से जुड़े लोग। फोटो :हरिभूमि

रंगों का त्यौहार होली बहादुरगढ़ में पूरे हर्षोल्लास से मनाया गया। शुक्रवार को सारा दिन होली की मस्ती में डूबे हर वर्ग के लोगों ने जमकर धमाल मचाया। हर कॉलोनी, हर गली व बाजारों में सुबह से लेकर दोपहर तक खूब गुलाल उड़ा। वहीं क्लीन एंड ग्रीन एसोसिएशन द्वारा मिट्टी से होली खेली गई।

फाल्गुनी बयार की मादकता के बीच बोर्गों ने एक दूसरे को बधाई देकर अबीर गुलाल व रंगों से सराबोर किया। त्यौहार की मस्ती में डूबे लोगों की हंसी, ठिठोली से वातावरण रंगीन बन गया। शुक्रवार को सूरज की पहली किरण धरती पर पहुंचने से पहले ही बच्चे घरों से निकल पड़े और एक दूसरे पर पिचकारियों की बौछार शुरू कर दी।

म्यूजिक सिस्टम की खनक पर युवा वर्ग थिरकता नजर आया। शहर से लेकर गांवों में लोगों ने होली के त्यौहार का जमकर आनंद उठाया। परंपरा के अनुसार गांवों में देवरों ने भाभियों पर पानी फैंका तो उन्होंने खूब कोड़े मारे। वहीं क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट के सदस्यों ने शुक्रवार को सेक्टर-13 स्थित चरक पार्क में मिट्टी से होली खेली। पर्यावरणप्रेमी वजीर दहिया, प्रदीप रेढू, नरेंद्र धनखड़, सोमबीर कादियान, सुभाष शर्मा, मुकेश, नीरज बंसल आदि ने मिट्टी में होली पर खूब धमाल बोला और एक दूसरे को होली की बधाई दी। धरती व पर्यावरण से प्रेम का संदेश भी दिया। कई स्थानों पर होली पर्व के समारोहों का भी आयोजन किया गया।

निलोठी में होली मिलन

गांव निलोठी में डॉ. भीमराव अंबेडकर समिति ने होली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया। प्रधान डॉ. ओम मेहरा, उप प्रधान सूरत टांक, सरपंच पति ओमप्रकाश लाल, खंड समिति सदस्य बलराज, जगबीर, विनोद, विक्की, मनीष, अनूप, देवेंद्र, बिजेंद्र दीक्षित, जयभगवान नान्हा, सतबीर, बलराज व देव आदि ने गुलाल के टीके लगाकर एक-दूसरे को बधाई दी।

बुजुर्गों के पैरों में गुलाल लगाकर आशीर्वाद लिया

झज्जर। दुल्हेंडी पर्व पर मस्ती करते हुए बालक। फोटो :हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

- पारंपरिक रूप से मनाया गया रंगोत्सव, क्लीन एंड ग्रीन ट्रस्ट ने मिट्टी में खेली होली
- युवाओं ने जमकर उड़ाया गुलाल दिनभर चली फाग की मस्ती

शुक्रवार को दुल्हेंडी पर्व के चलते लोगों ने जमकर गुलाल उड़ाया। बच्चों-बड़े यहां तक की बुजुर्गों ने भी दुल्हेंडी पर्व का खूब आनंद उठाया। अलसुबह ही बच्चे घरों से निकल कर हाथों में रंग व पिचकारी लिए हुए लोगों पर पानी व रंग उडेलते दिखाई दिए। दिनभर रंग-बिरंगे रंगों में सने युवाओं के चेहरे मस्ती करते नजर आए। व्यक्तियों ने अपने घर के बुजुर्गों के पैरों में गुलाल लगाकर उनका आशीर्वाद लिया। घर की महिलाओं द्वारा स्वादिष्ट व्यजंन बनाए गए। इसके अलावा कई जगहों पर देवर-भाभी के बीच पानी व कोरड़ों से खेली जाने वाली होली भी खेली गई। महिलाएं पानी बरसाने वालों पर कपड़ों से बनाए गए कोरडे और डंडे बरसाती नजर आई। पूरे दिन गर्मी का माहौल रहा जहां पानी से होली खेलने में युवाओं ने आनंद उठाया। उधर, पुलिस के स्तर पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम दिखाई दिए। पुलिस की पीसीआर व राइडर दिनभर गश्त करती रही।

1.32 करोड़ में बनेगा बराही कुलासी लिंक रोड

- विधायक राजेश जून का ग्रामवासियों ने खूब स्वागत किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। नारियल फोड़कर लिंक रोड के निर्माण का शुभारंभ करते विधायक राजेश जून। फोटो :हरिभूमि

विधायक राजेश जून ने बराही से कुलासी लिंक रोड का नारियल फोड़कर विधिवत शुभारंभ किया। उन्होंने बताया कि 5.15 किलोमीटर लंबाई तक बनने वाले इस रोड पर 1 करोड़ 32 लाख 57 हजार की धनराशि खर्च होगी। ग्रामीणों ने इसके लिए उनका आभार जताया। विधायक राजेश जून ने कहा कि सुगम आवागमन सुनिश्चित करने के लिए बहादुरगढ़ हलके में गांव को गांव तक जोड़ने वाले लिंक रोड बनाए जा रहे हैं। इससे ग्रामीणों के साथ ही राहगीरों को सहूलियत होगी। बराही से कुलासी लिंक रोड निर्माण कार्य का शुभारंभ करने पहुंचे विधायक राजेश जून का ग्रामवासियों ने खूब स्वागत किया। हलके में निरंतर विकास कार्य करवाने के लिए आभार भी जताया। राजेश जून ने कहा कि सड़क निर्माण कार्य में लगने वाली सामग्री की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। निर्माण कार्य में कोताही सहन नहीं होगी। राजेश जून ने कहा कि पिछले कई वर्षों से बहादुरगढ़ हलका विकास कार्यों को तरस रहा था। प्रचंड जीत के बाद से ही वे लगातार विकास कार्यों का श्रीगणेश कर रहे हैं। ग्रामीण भी विकास कार्यों की निर्माण सामग्री पर नजर बनाए रखें। इस अवसर पर सरपंच मोहित, प्रधान रोमी, बिजेंद्र व पप्पू आदि ग्रामवासी मौजूद रहे।

मीनाक्षी रोहिल्ला ने साइकिलिंग में जीते दो स्वर्ण पदक

बहादुरगढ़। उड़ीसा के भुवनेश्वर में आयोजित ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी ट्रैक साइकिलिंग प्रतियोगिता में झज्जर जिले की बेटी मीनाक्षी ने दो स्वर्ण पदक जीते हैं। गांव दूबलधन की रहने वाली मीनाक्षी रोहिल्ला ने व्यक्तिगत व टीम इवेंट में स्वर्ण पदक जीतकर प्रदेश का नाम रोशन किया है। नरेंद्र रोहिल्ला ने बताया कि भुवनेश्वर में 9 से 13 मार्च 2025 तक चली ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी ट्रैक साइकिलिंग प्रतियोगिता में मीनाक्षी ने 10 किलोमीटर स्क्रैच रेस में गोल्ड मेडल तथा 4 किलोमीटर टीम परसुइट में गोल्ड मेडल जीते। मीनाक्षी पहले भी कई राष्ट्रीय स्पर्धा में पदक जीत चुकी हैं। हरिओम ने भी मीनाक्षी और उनके पिता नरेंद्र रोहिल्ला को बधाई दी है।

फेस सत्यापन को लेकर किया जागरूक

बहादुरगढ़। महिला एवं बाल विकास विभाग की तरफ से आंगनबाड़ी में राशन देने से पहले अब पात्रों के फेस सत्यापन और ओटीपी लेना अनिवार्य का दिया गया है। इसे लेकर गांव हसनपुर परनाला में सरपंच मुकेश राठी व सरपंच एसोसिएशन के प्रधान अशोक राठी ने जागरुकता अभियान चलाया। प्रधान अशोक राठी ने बताया कि सरकार ने आंगनवाड़ी केंद्रों से मिलने वाले पोषण आहार की प्रक्रिया को पारदर्शी और सुरक्षित बनाने के लिए नई व्यवस्था शुरू की है। इसके अनुपालन में विभाग द्वारा सभी आंगनबाड़ी वर्करों को पोषण ट्रैकर पर फेस सत्यापन और ईकेवाईसी का काम करने के निर्देश दिए गए हैं। अब टेक होम राशन के लिए फेस वैरिफिकेशन और ओटीपी प्रणाली लागू की जा चुकी है। नई प्रणाली के अनुसार, जब महिलाएं आंगनवाड़ी केंद्र से पोषण आहार लेने आएंगी। उनका चेहरा पढ़कर लाभार्थियों को उनके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर ओटीपी भेजा जाएगा, जिसे आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को दिखाकर सत्यापन करवाया जाएगा। इससे ये सुनिश्चित होगा कि केवल असली लाभार्थियों को ही पोषण आहार मिले।

बहादुरगढ़। परनाला आंगनबाड़ी में फेस सत्यापन को लेकर जागरुक करते अशोक राठी। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। जयपाल दहिया को सम्मानित करते सरदार गुरमीत सिंह व अन्य। फोटो :हरिभूमि

जयपाल दहिया को किया सम्मानित

बहादुरगढ़। यमुनानगर में पिछले महीने आयोजित हरियाणा स्टेट मास्टर्स गेम्स चैंपियनशिप में तीन अलग-अलग इवेंट्स में स्वर्ण पदक जीतने वाले सेवानिवृत्त प्राचार्य जयपाल दहिया को देवीलाल पार्क में सम्मानित किया गया। पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी सरदार गुरमीत सिंह समेत अनेक योग साधाकों ने विजेता वेटरन खिलाड़ी को सम्मानित किया। बता दें कि 69 वर्षीय सेवानिवृत्त प्राचार्य जयपाल दहिया वर्ष 2017 में दिल्ली के हिरण कूदना स्कूल से प्राचार्य के पद से सेवानिवृत हुए थे। उन्होंने अब तक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी आयु से अधिक पदक जीते हैं। सरदार गुरमीत सिंह ने कहा कि जयपाल दहिया से प्रेरित होकर युवाओं को खेलों में बढ़-चढ़ कर भाग लेना चाहिए। इससे युवाओं का स्वास्थ्य तो ठीक रहता ही है, साथ ही उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने युवाओं से नशे की लत से भी दूर रहने की अपील की।

झज्जर। भदाना गांव की चौपाल में बनाई गई रंगोली। फोटो :हरिभूमि

रंगोली से ग्राहकों को दिया जागरुकता का संदेश

झज्जर। शनिवार को विश्व उपभोक्ता दिवस पर क्षेत्र के गांव भदाना की चौपाल में भूगोल प्राध्यापक मुकेश शर्मा व अंशुल शर्मा ने जागो ग्राहक जागो शीर्षक से एक विशाल रंगोली बनाई। मुकेश शर्मा ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 15 मार्च को विश्व उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है। यह दिवस मनाने का उद्देश्य है कि ग्राहक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो व सही नियमों की जानकारी उसका अधिकार है। अगर कहीं भी ग्राहकों के अधिकारों का हनन होता है तो प्रत्येक जिले में उनके अधिकारों की रक्षा के लिए उपभोक्ता अदालत भी बनाई गई है। चौपाल रंगोली में पूर्व सैनिक देवीदत्त शर्मा, सूबेदार सुभाष शर्मा, अनिल कौशिक, संजय कौशिक, मोनू वशिष्ठ, प्रवेश शर्मा, बबिता शर्मा, केशव शर्मा, अर्जुन शर्मा, अलीशा शर्मा सहित अन्य भी मौजूद रहे।

बाग वाला मोहल्ला, अग्रवाल कॉलोनी व जटवाड़ा मोहल्ला में सीवर ओवरफ्लो

शहर की गलियों में भरा सीवर का दूषित पानी

- गंदा पानी रास्ते में भरने से लोगों को आने-जाने में परेशानी झेलनी पड़ती है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। बाग वाला मोहल्ला के चौक में भरा गंदा पानी, अग्रवाल कॉलोनी की गली में भरा सीवर का पानी। फोटो :हरिभूमि

पब्लिक हेल्थ विभाग की अकर्मणयता बहादुरगढ़ के नागरिकों पर भारी पड़ रही है। कई कॉलोनियों में सीवर लाइन अवरुद्ध हैं। सीवर के मेनहोल ऑवरफ्लो होने से गलियों और चौराहों में जलभराव हो रहा है। गंदा पानी रास्ते में भरने से लोगों को आने-जाने में परेशानी झेलनी पड़ती है। लोगों का कहना है कि अधिकारियों को बार-बार शिकायत करने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हो रहा है। नागरिकों में रोष व्याप्त है कि सीवरेज की निकासी समुचित ढंग से नहीं हो रही है। सीवर लाइनों की नियमित रूप से सफाई नहीं होने से सीवर अक्सर जाम हो जाते हैं। सीवर लाइन जाम होने से क्षेत्र की पानी निकासी अवरुद्ध हो जाती है। शहर के बाग वाला मोहल्ला में भी सीवर का पानी गलियों व चौराहों में भर जाता है। एक तरफ जहां लोगों को आने-जाने के लिए गंदे पानी से होकर गुजरना पड़ता है। वहीं स्थानीय निवासियों को दुर्गंध और मच्छरों के बीच जीना पड़ रहा है। गंदे पानी के कारण पैरों में खुजली होने लगती है। बलवंत, विपिन व पप्पू का कहना है कि सीवर लाइनों की हालत जर्जर है। नियमित रूप से सफाई नहीं हो रही है। गली में भरे गंदे पानी से मच्छर पनप रहे हैं। इससे दुर्गंध की समस्या बढ़ गई है। ही नारकीय हालात अग्रवाल कॉलोनी में बने हुए हैं। यहां बच्चों के कपड़े खराब हो जाते हैं। सीवर के पानी के कारण क्षेत्र में दुर्गंध फैली रहती है।

दुर्गंध से लोगों का घरों में रहना दूभर हो गया है। स्थानीय निवासी रवींद्र गुप्ता ने अधिकारियों से पानी निकासी की व्यवस्था दुरुस्त करने की मांग की है। जटवाड़ा मौहल्ला के 5 बिसवा में भी सीवर ओवरफ्लो होकर गंदा पानी गलियों में भर जाता है। जलापूर्ति एवं अभियांत्रिकी विभाग लोगों के स्वास्थ्य के प्रति गंभीर नहीं है। इससे लोगों में रोष व्याप्त है।

टांडाहेड़ी के हरिदास मंदिर में लगा मेला

- टांडाहेड़ी के बाबा हरिदास मंदिर पर वर्ष में दो बार लगता है मेला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। बाबा हरिदास के समक्ष के शीश नवाते श्रद्धालु। फोटो :हरिभूमि

गांव टांडाहेड़ी के बाबा हरिदास मंदिर प्रांगण में होली के अवसर पर मेले व भंडारे का आयोजन किया गया। इसकी तैयारियों को लेकर मंदिर कमेटी के सदस्य कई दिनों से जुटे हुए थे। विदित है कि होली व दशहरे पर बाबा हरिदास मंदिर में हर वर्ष मेले का आयोजन किया जाता है। होली के मौके पर टांडाहेड़ी गांव में बाबा हरिदास मंदिर के प्रांगण में आयोजित मेले में असंख्य श्रद्धालुओं ने पवित्र तालाब में स्नान किया और परिक्रमा की। बता दें कि टांडाहेड़ी के बाबा हरिदास मंदिर पर वर्ष में दो बार मेला लगता है। श्रद्धालुओं की आस्था का सम्मान करते हुए मंदिर कमेटी ने बेहतरीन व्यवस्था की थी। यहां टांडाहेड़ी ही नहीं बल्कि आसपास के क्षेत्र से भारी संख्या में श्रद्धालु मंदिर में मत्था टेकने के उपरांत पवित्र तालाब में स्नान करते हैं। यह तालाब पहले कच्चा था, जिसे श्रद्धालुओं की सुविधा को देखते हुए कुछ वर्ष पहले पक्का बनाया गया था। शुक्रवार के श्रद्धालुओं ने पवित्र तालाब में स्नान के बाद बाबा हरिदास की ज्योत जलाई और मन्नतें मांगी। इस मेले में हर बार की तरह असंख्य श्रद्धालुओं ने शीश नवाया और भविष्य में सुख शांति की कामना की। मेले के दौरान लगे भंडारे में श्रद्धालुओं ने प्रसाद छका।

खबर संक्षेप

सड़क हादसे में युवक घायल, दिल्ली रेफर

बहादुरगढ़। बादली रोड पर कार की चपेट में आने से एक युवक घायल हो गया। गंभीर रूप से घायल युवक को दिल्ली के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। परिजनों के बयान पर सिटी थाना पुलिस ने गाड़ी चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। पुलिस को दी शिकायत में रणजीत कॉलोनी के निवासी महावीर सिंह ने बताया कि शुक्रवार की शाम को मेरे पास कॉल आई। कॉलर ने बताया कि आपके लड़के मनोज का गौशाला के पास एक्सीडेंट हो गया है, उसे सरकारी अस्पताल में ले जाया गया है। इसके बाद मैं अपने भतीजे के साथ नागरिक अस्पताल में गया। वहां देखा तो मनोज की हालत गंभीर थी। इसलिए उसे दिल्ली के अग्रसेन अस्पताल में लेकर गए। उधर, सिटी पुलिस का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है। आरोपी गाड़ी चालक की पहचान हो चुकी है।

मोबाइल टावर के पार्ट चोरी, केस दर्ज

बहादुरगढ़। छोटूराम नगर में स्थित मोबाइट टावर के पार्ट्स चोरी हो गए। इस संबंध में पुलिस को शिकायत दे दी गई है। दहकोरा के निवासी मनीष का कहना है कि हमारी कंपनी टावरों की सुरक्षा करती है। छोटूराम नगर में हमारा एक टावर है। टावर से तार काटकर किसी ने तीन आरआरयू चुरा लिए। इससे टावर की सर्विस प्रभावित हो गई। सूचना मिली तो हम मौके पर पहुंचे। उधर, पुलिस का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

धार्मिक आयोजन में दो महिलाओं की चेन टूटी

झज्जर। क्षेत्र के गांव अकेहड़ी मदनपुर में धार्मिक आयोजन में गई दो महिलाओं के गले से सोनी की चेन तोड़ने का मामला सामने आया है। पुलिस को दी शिकायत में राजेश ने बताया कि बीती चौदह मार्च को उनके गांव के मंदिर में एक धार्मिक आयोजन था जिसमें उसकी भाभी अंजू देवी व सुमन भी शामिल हुई थी। वहां पूजा-अर्चना के दौरान किसी ने दोनों महिलाओं के गले से सोने की चेन तोड़ ली। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

कार चालक ने खड़ी बाइक को टक्कर मारी

झज्जर। क्षेत्र के गांव अहरी में एक तेज रफ्तार कार ने दुकान के सामने खड़ी एक मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। जिसके कारण एक व्यक्ति घायल हो गया। पुलिस को दी शिकायत में अहरी गांव निवासी नरेश कुमार ने बताया कि वह जब बीती तेरह मार्च की शाम करीब साढ़े पांच बजे गांव के बिजेंद्र की दुकान पर घरेलू सामान लाने के लिए गया था। उसकी दौरान खुड्डन गांव की ओर से आई एक तेज रफ्तार कार ने दुकान के सामने खड़ी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि वह मोटरसाइकिल आकर उसके पैर पर आ गिरी। इसके बाद उसका भतीजा राकेश उसे उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लेकर पहुंचा। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

शहर के पॉश सेक्टर-6 में लूटपाट का मामला : घर के भेदी ने रचा था लूट का षड्यंत्र

- मंगलवार को सेक्टर 6 स्थित मकान में हुई थी लूट की वारदात
- शिकायतकर्ता के चचेरे भाई ने ही रची लूट की साजिश
- साजिशकर्ता गिरफ्तार, दो आरोपियों की तलाश कर रही पुलिस

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

चंद दिनों पहले सेक्टर-6 के एक मकान में हुई लूटपाट की वारदात पुलिस ने सुलझा ली है। इस वारदात में घर का भेदी ही मास्टर माइंड निकला। आरोपी ने अपने दो साथियों से यह वारदात करवाई। मामले में एक आरोपी को जेल भेजा जा चुका है। जल्द ही अन्य दो आरोपियों को भी गिरफ्तार करने की बात पुलिस द्वारा कही जा रही है।

बहादुरगढ़। पुलिस की गिरफ्त में आरोपी।

ये था मामला

दरअसल, मंगलवार की दोपहर को शिक्षक रमेश और उनकी पत्नी ड्यूटी पर गए हुए थे। दोपहर के वक्त ऊपरी तल पर बने कमरे में उनका बेटा आर्यन सो रहा था। करीब डेढ़ बजे दो नकाबपोश युवक अंदर घुसे और उसे बंधक बनाकर लूटपाट की। सोने की चेन, अंगूठी व कैश आदि ले गए थे। इस संबंध में सेक्टर 6 थाना पुलिस ने आर्यन की शिकायत पर केस दर्ज कर जांच शुरू की। मामले में जांच आगे बढ़ी तो पुलिस की शक की सूईं मकान में ही रहने वाले रमेश के भतीजे दीपक पर गई। डीसीपी मयंक मिश्रा ने बताया कि वारदात की शाम की आरोपियों की पहचान कर ली गई थी। मामले में जांच के दौरान कुछ कड़ियां ऐसी मिली, जिनसे पता चला कि वारदात में दीपक का हाथ है। फिर सख्ताई से पूछताछ की तो उसने खुलासा कर दिया। अन्य आरोपियों की पुलिस तलाश कर रही है।

तीनों आरोपी फोन से संपर्क पर थे :

सामने आया कि दीपक ने ही अपने दो जानकारों से यह वारदात कराई। वारदात के दिन दीपक घर में ही था। उसने फोन करके अपने साथियों को बताया कि वह मकान से बाहर जा रहा है। इसके बाद ही दोनों बदमाश घर में घुसे और वारदात कर दी। चूंकि जगह जगह नाके लगे थे तो चेकिंग के भय से आरोपियों ने अपनी स्कूटी वहीं पर छोड़ दी। दीपक पर इससे पहले एक हत्या का केस है, जिसमें वह जमानत पर है। वारदात के दिन दीपक की अपने साथियों से कई बार फोन पर बात हुई। फरार चल रहे अन्य दोनों आरोपियों की पहचान हो चुकी है। इनमें एक आरोपी पर करीब पांच आपराधिक केस हैं। जल्द ही उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा। दीपक को जेल भेजा जा चुका है।

खेत का काम निपटा स्कूटी पर घर लौट थे ललित व अनिल

स्कॉर्पियो ने स्कूटी को टक्कर मारी पुलिसकर्मी और किसान की मौत

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

क्षेत्र के गांव सिलानी के नजदीक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने स्कूटी को टक्कर मार दी। इस हादसे में स्कूटी सवार दो युवकों की मौत हो गई। दोनों युवक एक ही परिवार से संबंध रखते थे और शुक्रवार की रात करीब नौ बजे खेत में काम करने के बाद वापिस घर की तरफ लौट रहे थे। मृतकों की पहचान सिलानी गांव निवासी करीब 37 वर्षीय ललित पुत्र रविंद्र और करीब 38 वर्षीय अनिल पुत्र सुमेर के तौर पर की गई है। मृतकों में जहां एक युवक हरियाणा पुलिस का जवान था वहीं दूसरा युवक खेतीबाड़ी करता था। हादसे की सूचना मिलने उपरांत पुलिस टीम ने दोनों मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल परिसर में बने शवगृह भिजवाया।

■ पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच की शुरू

झज्जर। मामले में कार्रवाई करते पुलिस कर्मचारी।

झज्जर। ललित व अनिल कुमार के फाइल फोटो।

परिवार में मातम

मृतक ललित हरियाणा पुलिस का जवान था और रोहतक में हेड कांस्टेबल के पद पर तैनात था। वह विवाहित था और 8 साल के पुत्र और 5 वर्षीया पुत्री का पिता था। मृतक अनिल भी शादीशुदा था। उसके दो पुत्र व एक पुत्री है। उसके पिता की करीब 10 साल पहले बिजली का करंट लगने से मौत हो चुकी है। अनिल खेतीबाड़ी का काम करता था। मामले के जांच अधिकारी जिले सिंह ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि सिलानी गांव के पास सड़क हादसा हुआ है जिसमें स्कॉर्पियो गाड़ी की टक्कर से स्कूटी सवार दो युवकों की मौत हुई है। ललित के भाई अनिल की शिकायत पर स्कॉर्पियो गाड़ी चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। दोनों मृतकों के शवों का पोस्टमार्टम कराने के बाद उन्हें परिजनों को सौंप दिया गया है। इस संबंध में पुलिस द्वारा नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

खेड़ी आसरा के पास हादसा

पुलिस को दी शिकायत में मृतक ललित के छोटे भाई अनिल ने बताया कि वह उनका पैतृक गांव खेड़ी आसरा है जबकि उनका परिवार नाना-नानी के घर गांव सिलानी पाना जालिम में रहता है। उसका भाई ललित हरियाणा पुलिस में रोहतक नौकरी करता है। शुक्रवार को जब हम खेत में काम करने गए थे तो करीब सवा आठ बजे अनिल कुमार व ललित भी खेत में पहुंच गए। इसके बाद जब वे सभी करीब सवा नौ बजे खेत से लौट रहे थे। जहां वह अपने साथी जयकरण के साथ एक मोटरसाइकिल पर सवार था वहीं अनिल कुमार व ललित इलेक्ट्रिक स्कूटी पर थे। जब वे गांव के नजदीक पहुंचे तो ललित व अनिल कुमार की स्कूटी को एक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो गाड़ी ने टक्कर मार दी। इसके बाद गंभीर रूप से घायल ललित व अनिल कुमार को उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित द्वारा स्कॉर्पियो गाड़ी का नंबर व चालक को भी नामजद किया गया है।

राजौंद एनकाउंटर में मारे गए अनूप का गांव छुड़ानी में अंतिम संस्कार

बहादुरगढ़। कैथल के राजौंद में एनकाउंटर के दौरान मारा गया बदमाश अनूप बहादुरगढ़ के गांव छुड़ानी से था। गांव में ही अनूप के शरीर का दाह संस्कार किया गया। करीब दो महीने पहले ही अनूप ने छुड़ानी में आकर अपने पिता के हत्या के दोषियों पर फायरिंग की थी। जिसमें एक की जान चली गई थी।

दरअसल, 2002 में अनूप के पिता की बेरहमीपूर्वक हत्या कर दी गई थी। हत्या की उस वारदात में अनूप की मां तथा गांव के रहने वाले हवा सिंह और रवि को उम्रकैद की सजा हुई थी। गांव के लोगों के अनुसार, अनूप और उसकी बहन का पालन पोषण उसकी बुआ ने किया और उसका एक भाई मौसी के पास रहा। जब अनूप गांव से गया तो बहुत छोटा था। बुआ के वहां रहते एक बड़ी घटना हुई, जिसमें अनूप का भी नाम आया। इसके बाद वह जेल में गया। जेल में आपराधियों के संपर्क में आ गया। पिता की हत्या के बदले की भावना भी उसके मन में थी। ज्यूं ज्यूं उम्र बढ़ी तो बदले की भावना भी विकराल होती गई। गत 18 जनवरी की शाम को वह बाइक पर सवार होकर छुड़ानी में आया। यहां अपने पिता की हत्या के दोषी हवा सिंह व रवि पर फायरिंग की। हवा सिंह को गोलियां लगी और कुछ दिनों बाद उसने दम तोड़ दिया।

ग्रामीणों के अनुसार, अनूप छुड़ानी में बहुत कम आता था। सात, आठ साल पहले गांव में हुई एक वारदात भी उसका नाम आया था। अपने हिस्से की जमीन भी वह बेच चुका था। शुक्रवार को उसके एनकाउंटर की सूचना मिली। गांव में ही उसका दाह संस्कार किया गया है। बता दें कि अनूप पर दिल्ली, हरियाणा में आधा दर्जन से अधिक आपराधिक मुकदमे दर्ज थे। वह गैंग से जुड़ा था और कैथल इलाके में सक्रिय था।

मेले में 48 युवाओं ने भरे ऋण के आवेदन

झज्जर। शनिवार को पंजाब नैशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान द्वारा लोन मेला और प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान निदेशक उमेश भूकर गोरिया ने की। उन्होंने बताया कि संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों को स्वरोजगार शुरू करने के लिए लोन की सहायता दिलाने के उद्देश्य से आयोजित इस लोन मेले में 48 ऋण आवेदन भर कर विभिन्न बैंकों में भेजे गए। इस दौरान डेरी फार्मिंग, भेड़-बकरी पालन, मुद्रा लोन, सिलाई - कपडे की दुकान, किरयाना दुकान आदि के आवेदन प्राप्त हुए। निदेशक उमेश भूकर गोरिया ने मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को अपना काम शुरू करने के लिए बैंक से लोन के महत्त्व बारे जानकारी दी। उन्होंने कहा कि छोटे लोन लेकर भी अपने काम को शुरू किया जा सकता है।

रंग डालने का विरोध करने पर परिवार से मारपीट, केस दर्ज

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शहर में दुल्हेंडी का पर्व उत्साह के साथ मनाया गया। इस दौरान इलाके में कोई बड़ी वारदात तो नहीं हुई लेकिन कई जगह लोगों के बीच झगड़े जरूर हुए। झगड़ों की शिकायत लेकर लोग थानों में पहुंचे। वहीं गांव कानोंदा में तो एक परिवार पर हमला कर दिया गया। घर में घुसकर मारपीट करने की बात सामने आई है। हमले में कुछ चोटिल हुए। सदर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

ये था मामला : शिकायतकर्ता विकास का कहना है कि दुल्हेंडी के दिन मैं, मेरा बेटा व भतीजी तथा मां अपने मकान के बाहर बैठे थे। तभी गाड़ी सवार कुछ लोग वहां आए। उनमें गांव का निवासी एक युवक व उसका मामा तथा चार, पांच अन्य थे। गाड़ी से दो युवक बाहर आए और मेरी मां व भतीजी पर सिलेंडर से रंग स्प्रे करने लगे। हमने विरोध किया तो उन्होंने मारपीट शुरू कर दी। मेरे बेटे का गला घोंट दिया। बुजुर्ग मां के साथ भी मारपीट की गई। फिर पुलिस को सूचना दी तो वे धमकी देकर भाग गए। हमें काफी चोट आई। इसके बाद जब अस्पताल से हम अपने घर आए तो चार बजे फिर से वे लोग आ गए। दरवाजों के साथ तोड़फोड़ की और गेट कूदकर अंदर आ गए। हमने कमरे में छिपकर अपनी जान बचाई। जाते जाते उन्होंने मकान के बाहर खड़े एक ग्रामीण पर भी हमला कर दिया। उधर, सदर थाना पुलिस का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

महिला से गांव का पता पूछा और कंगन उतरवा लिए

बहादुरगढ़। इलाके में महिलाओं के साथ ठगी के मामले बढ़ रहे हैं। अब यहां गांव सांखोल में एक शातिर बाइक सवार ने पहले तो महिला से गांव जाने का रास्ता पूछा और फिर उससे सोने के कंगन उतरवा लिए। जब तक महिला कुछ समझ पाती, आरोपी चंपत हो चुका था। सेक्टर 6 थाना पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है।वारदात गांव सांखोल में बराही मोड़ पर हुई है। सांखोल की निवासी वेदवती का कहना है कि वह शनिवार की सुबह करीब साढ़े सात बजे अपने खेत से वापस आ रही थी। जब बराही मोड़ पर पहुंची तो एक बाइक सवार युवक आया। उसने बराही जाने का रास्ता पूछा और फिर बातें करने लगा। बातों ही बातों में उसने मुझ से सोने के दो कंगन उतरवा लिए और वहां से चल दिया। जब तक मुझे कुछ समझ आता, वह काफी दूर जा चुका था। मैंने शोर मचाया लेकिन शातिर चंपत हो गया। उधर, सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने महिला की शिकायत पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

डंपर चालक ने लिया यूटर्न गाड़ी टकराने से चार घायल

झज्जर। शहर के दिल्ली रोड स्थित फ्लाईओवर के नजदीक एक डंपर व गाड़ी की टक्कर में गाड़ी सवार चार लोग घायल हो गए। पुलिस को दी शिकायत में राजस्थान जिला अलवर के गादोज गांव निवासी राहुल यादव ने बताया कि वह, मनोज शर्मा, अविनाश कुमार तथा सुनील मोहन शर्मा चारों रोहद गांव की एक कंपनी में काम करते हैं। बीती तेरह मार्च को जब वे होली के अवकाश के चलते जयपुर जिले के साहुपुरा गांव निवासी धर्मेंद्र कुमार पलसानिया के साथ गाड़ी में सवार होकर अपने घर जा रहे थे तो जब वे स्थानीय बाईपास से होते बहादुरगढ़ फ्लाईओवर के नजदीक पहुंचे तो उनके आगे एक डंपर चालक लापरवाही के साथ गाड़ी चलाता जा रहा था।

घायल पीजीआई रेफर : उसने बगैर किसी इंडीकेटर के बहादुरगढ़ फ्लाईओवर से सर्विस रोड की तरफ यूटर्न ले लिया जिस कारण उनकी गाड़ी डंपर से जा टकराई और वे गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बाद डंपर चालक अपनी गाड़ी लेकर मौके से फरार हो गया।

बाद में राहगीरों द्वारा उन्हें उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल पहुंचाया गया। जहां राहुल, अविनाश, मनोज शर्मा व सुशील मोहन शर्मा को चिकित्सकों द्वारा रोहतक पीजीआई रैफर किया गया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

अचानक हुई बूंदाबांदी ने बढ़ाई ठंडक, फसलों को नुकसान

झज्जर। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार शुक्रवार सांय तेज हवाओं के साथ हल्की बारिश हुई। जिसके कारण जहां मौसम में ठंडक घुल गई और तापमान में गिरावट दर्ज की गई। वहीं फसलों को नुकसान पहुंचा है। जिसके कारण किसानों के चेहरों पर चिंता की लकीरें दिखाई दी। किसानों का कहना है कि फिलवक्त सरसों की फसल की कटाई चल रही है। वहीं गेहूं की फसल में भी पानी दिया जा चुका है। जिसके कारण हल्की बारिश के साथ चली तेज हवाओं के कारण फसल गिर गई है। जिसके कारण किसानों को काफी नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा कि मौसम विभाग ने अभी भी दो दिनों तक बारिश होने का अनुमान लगाया है। उन्होंने कहा कि अगर बारिश और तेज हवाएं चलती है तो किसानों को काफी नुकसान होगा।

ऑनलाइन फोन मंगवाना पड़ा महंगा, खाते से निकल गए 35 हजार

झज्जर। क्षेत्र के गांव अहरी निवासी एक व्यक्ति को ऑनलाइन फोन मंगवाना पड़ा। जब समय पर फोन नहीं पहुंचा तो उसने संबंधित मोबाइल कंपनी के लोगों से संपर्क किया तो उन्होंने एड्रेस अपडेट नहीं होने की बात कही। शिकायतकर्ता के अनुसार जब शातिर ठग ने व्हाट्सअप कॉल करते हुए उसे एक लिंक भेजा जिस पर एड्रेस अपडेट करना था। जब उसने लिंक को ओपन किया तो शातिर ठगों ने फोन हैक करते हुए उसके खाते से 35 हजार रुपये निकाल लिए। पीड़ित की शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर केस दर्ज कर लिया है। मामले के जांच अधिकारी ने बताया कि जल्द आरोपी को पकड़ा जाएगा।

बुद्धोमाता मंदिर के नजदीक कबाड़ के गोदाम में आग लगी

- दमकल विभाग की टीम के पहुंचने से पहले लोगों ने आग पर काबू पाया

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शुक्रवार दोपहर शहर के माता गेट स्थित प्राचीन बुद्धोमाता मंदिर के नजदीक एक कबाड़ के गोदाम में अचानक आग लग गई। जब आस-पास के लोगों ने गोदाम से उठती हुई आग की तेज लपटें देखी तो उन्होंने फायर ब्रिगेड को सूचना देते हुए आग पर काबू पाने का प्रयास किया। जब गोदाम में आग लगी तो उस दौरान गोदाम के मेन गेट पर ताला लगा हुआ था। दुल्हेंडी पर्व पर अवकाश के चलते वहां कोई भी कर्मचारी मौजूद नहीं था। ऐसे में कालोनीवासियों को आग पर काबू पाने के लिए गोदाम का ताला तोड़ना पड़ा। उसके बाद बड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। प्रत्यक्षदर्शी लवली शर्मा ने बताया कि उन्हें जब गोदाम में आग लगने की सूचना मिली तो वे अपने साथियों के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने बुद्धोमाता मंदिर के सामने भरे सड़क पर भरे बरसाती पानी से आग पर काबू पाया। जब उन्होंने गोदाम के अंदर जाकर देखा तो वहां आग की तेज लपटें उठ रही थी। आग को अधिक फैलने से रोकने के लिए उन्होंने सबसे पहले वहां पड़े प्लास्टिक के खाली कट्टों को हटवाया ताकि आग अधिक न फैल सके। इसके बाद सड़क पर भरे पानी से बाल्टी भर-भर आग को शांत किया। करीब आधे घंटे बाद फायर ब्रिगेड कर्मचारी भी पहुंचे जिन्होंने जल्द ही आग को बुझा दिया। लवली शर्मा ने बताया कि उनके साथ कृपाल, महेंद्र बंसल, पंडित नरेंद्र, उपेंद्र तिवारी सहित अन्य युवा भी मौजूद रहे जिनकी वजह से आग पर काबू पाया जा सका। प्रत्यक्षदर्शी लवली शर्मा ने बताया कि कबाड़ का गोदाम प्रमोद नामक व्यक्ति का है। कबाड़ का गोदाम होने के कारण वहां काम करने वाले कर्मचारी कई बार बिजली की तारों से तांबा या सिल्वर निकालने के लिए भी उनमें आग लगा देते थे। जब गोदाम से शुरू-शुरू में हल्का धुंआ उठने लगा तो लोगों ने सोचा कि वह आग गोदाम में काम करने वाले लोगों द्वारा लगाई गई होगी, लेकिन जब आग ने विकराल रूप लिया।

■ दुल्हेंडी पर छुट्टी के कारण जनहानि टली

सड़क पर जमा पानी से बुझा दी आग : कहते हैं कि जो होता है वह अच्छे के लिए होता है। यहां माता गेट में पिछले कई माह से जलभराव की समस्या है। कालोनीवासी इस संबंध में कई बार समस्या के समाधान की गुहार लगा चुके हैं। जब गोदाम में आग लगी तो यहां हुआ जलभराव आग बुझाने के काम आया। लोगों ने एकजुटता का परिचय दिखाते हुए एक चेन बनाकर एक के बाद एक करके पानी से भरी बाल्टियां गोदाम के अंदर तक पहुंचाई जिस कारण आग को बुझाया जा सका।

सूचना

मैं, राजेश पुत्र श्री शिवधन सिंह निवासी गांव सिलानी, पाना केशो, तहसील व जिला झज्जर, हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र विक्रम मेरे कहने–सुनने से बाहर है। इसलिये मैं इसको अपनी चल–अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। इससे लेन–देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

न्यायालय सहायक कलैक्टर द्वितीय श्रेणी बहादुरगढ़

राकेश आदि बनाम दर्शनपाल आदि

To,

ऋषिपाल पुत्र जयलाल पुत्र सुखलाल निवासी गांव लडरावन, तहसील बहादुरगढ़, जिला झज्जर

राकेश आदि ने आपके विरूद्ध दरखास्त तकसीम बाबत खेवट नंबर 71 // 63, खतौनी नंबर 78, मौजा लडरावन दायर की हुई है। आपको इस न्यायालय में तारीख 02-04-2025 को दिन में 09:00 बजे दरखास्त का उतर देने के लिए उपसंजात (हाजिर) होने के लिए तलब किया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते है, जिसे सम्यक अनुदेश दिए गए हों और जो इस वाद से संबंधित सारवन प्रश्नों का उतर दे सकें या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उतर दे सके। आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वादी की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जाएगा।

यह आज तारीख 06.03.2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर जारी किया गया है।

हस्ता/-सहायक कलैक्टर द्वितीय श्रेणी, बहादुरगढ़

K.R. MANGALAM
World School
Bahadurgarh
ENGAGE. LEARN. INNOVATE.

ATTENTION
CLASS XI ASPIRANTS
Bright Future Begins Here
ADMISSIONS OPEN FOR CLASS XI
Ace Our Entrance Exam and Secure
EXCLUSIVE SCHOLARSHIPS
Examination Date: March 16th & 23rd 2025
Exam Timing: 10:00 am to 12:00 pm
Register Now!
Limited Seats Available
SCORE HIGH AND GET ATTRACTIVE SCHOLARSHIPS
Scan The QR Code Register Now.
Free Counselling Sessions also Available for IIT-JEE and NEET!

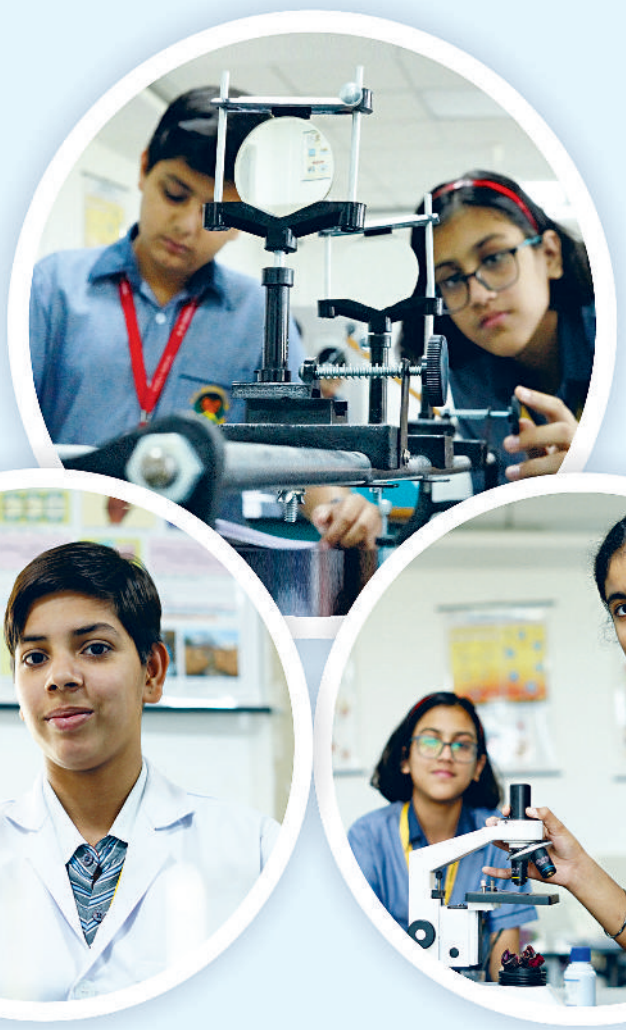

ADMISSIONS NOW OPEN
Session 2025-26
Nursery - Grade IX
(Play Group Also Available)

EMPOWERING MIND, ENRICHING FUTURE
- Special Workshops and Sessions for CUET
- Experiential Learning
- Tech Driven Classrooms
- Fully Equipped Laboratories
- Healthy Student Teacher Ratio
- Fostering Future Leaders with Creativity and a Commitment to Excellence

Ranked No. 1
INNOVATORS CATEGORY BY TIMES SCHOOL SURVEY 2024

admission@krmangalambahadurgarh.com
www.krmangalambahadurgarh.com
Sector-2, Near Gauri Shankar Mandir, Bahadurgarh
9549899503, 9992227978

G.K.- II | Vikaspuri | Kailash Colony | Paschim Vihar | Vaishali | Greater Noida | Faridabad | Gurugram | Bahadurgarh | Panipat | G.K.- I (IB) | Lucknow

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक रविवार 16 मार्च 2025

आज के दौर में अकसर देखा जाता है कि अधिकतर युवा आपस में बातचीत के दौरान भाषा की मर्यादा का ध्यान नहीं रखते हैं। वे अपनी पर्सनालिटी को बिंदास दिखाने के लिए प्राय: ऐसा करते हैं। सच्चाई यह है कि इससे न केवल उनकी सोशल इमेज बिगड़ती है, वर्कप्लेस पर आगे बढ़ने की राह में भी ऐसी भाषा रुकावटें पैदा करती है। इसलिए संवाद के दौरान सजग रहना जरूरी है।

आपसी संवाद की भाषा हो मर्यादित-सकारात्मक-मधुर

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

वर्चुअल दुनिया में परोसे गए कंटेंट की अमर्यादित भाषा को लेकर चल रही बहस के बीच हर किसी के लिए सभ्य शब्दों का महत्व समझना आवश्यक है। आभासी संसार से कहीं ज्यादा, असली दुनिया में सधी संतुलित अभिव्यक्ति जरूरी है। खासकर कूल बनने और कमाल का व्यक्तित्व हो जाने की भूल-भुलैया के इस दौर में युवाओं को यह बात समझनी ही होगी। जरूरी है कि अपने वर्कप्लेस पर भी शब्दों की सभ्यता का दामन थामे रहें। सधी छवि और सफल भविष्य के लिए वर्कप्लेस पर सभ्य भाषा बहुत मायने रखती है।

शब्दों से जुड़ा सम्मान

काम-काजी संसार में किसी भी तरह के लिखित या मौखिक बातचीत में असभ्य शब्दों का इस्तेमाल करने से बचें। किसी भी परिस्थिति में न तो असभ्य शब्द लिखें और न ही बोलें। ध्यान रहे कि आपके शब्दों से स्वयं का सम्मान भी जुड़ा है। यह न भूलें कि दूसरों के मन और मान को ठेस पहुंचाने वाले शब्द इस्तेमाल करने वाले खुद भी किसी से इज्जत नहीं पाते हैं। बावजूद इसके ऑफिस में भी ह्यूमर के नाम पर किसी सहकर्मी या सहायक स्टाफ की हंसी

उड़ाने की गलती बहुत से लोग करते हैं। इस तरह के असामान्य और कुंठाग्रस्त व्यवहार के घेरे में आने से बचने के लिए पहले ही कदम पर सजगता जरूरी है। वरना जाने-अनजाने कुछ भी कह-सुना देने की आदत बनती जाती है। बिना सोचे-समझे मुंह से अभद्र शब्द निकलने लगते हैं। करियर को नुकसान पहुंचाने वाली यह आदत खुद आपको भी एक कुंठित व्यक्तित्व ही देती है। जोश भरे युवाओं को हर पल याद रखना चाहिए कि काम-काजी दुनिया में अनुशासित रहना बहुत आवश्यक है। अच्छी भाषा, इसी अनुशासन का हिस्सा है। अनुशासन के दायरे में रहते हुए सदा सकारात्मक ढंग से बातचीत करने की राह चुनने में ही समझदारी है। किसी के साथ भी असभ्य संवाद करने से पहले याद रखिए कि ये शब्द स्वयं आपके सम्मान से भी जुड़े हैं।

संवाद से जुड़ा कारगर फॉर्मूला

प्रसिद्ध शोधकर्ता अल्बर्ट मेहराबियन द्वारा दिए गए 55-38-7 का फॉर्मूला बताता है कि कम्युनिकेशन 55 फीसदी नॉन वर्बल (शारीरिक भाषा यानी हाव-भाव) और 38 प्रतिशत वोकल (स्वर के द्वारा) होता है। संवाद में सिर्फ 7 फीसदी हिस्सा ही वर्बल यानी शब्दों से प्रकट होता है कि आप वास्तव में क्या कहते हैं? ऐसे में मजाक हो या प्रतिक्रिया देना, गलत शब्दों का इस्तेमाल आपकी अभिव्यक्ति की पूरी शृंखला ही बिगाड़ सकता है। इसलिए हर किसी को संवाद के दौरान अपने शब्दों के इस्तेमाल को लेकर पूरी तरह सजग रहना चाहिए।

इमेज पर पड़े बुरा प्रभाव

बातचीत में इस्तेमाल होने वाले अभद्र शब्द, इंसान की बॉडी लैंग्वेज भी बिगाड़ देते हैं। बोलने वाले के हाव-भाव को भी नेगेटिव रंगत में ढाल देते हैं। शब्दों पर कंट्रोल न करना, इंसान की बॉडी लैंग्वेज को अजीबो-गरीब बना देता है। समझना मुश्किल नहीं कि ऐसी सभी बातें व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करती हैं। जो सीधे-सीधे वर्कप्लेस पर आपकी इमेज बिगाड़ने वाली साबित होती हैं। वहीं सोच-समझकर बोलना, न केवल आपका फर्स्ट इंप्रेशन पॉजिटिव बनाता है बल्कि आगे भी आपकी सकारात्मक छवि को कायम रखता है। सोशल लाइफ हो या प्रोफेशनल, सोशल एटिकेट्स हमेशा मायने रखते हैं। आपको यह समझना चाहिए कि बातचीत में गलत शब्दों का चुनाव, आपको असहयोगी और अकड़ू व्यक्ति का तमगा दिलाने वाला बर्ताव साबित हो सकता है।

बेहतरी के लिए सही भाषा जरूरी

काम-काजी दुनिया में आपसे जुड़े सीनियर हों या जूनियर, सही सोच और अच्छे मैनर्स से सबका दिल जीता जा सकता है। स्पष्ट है कि इससे करियर में आगे बढ़ने में भी मदद मिलती है। बेहतर प्रोजेक्ट्स आपके हिस्से आते हैं। इतना ही नहीं सभ्य भाषा और सधा बर्ताव कई बार आपको किसी तकलीफ में फंसने से भी बचा लेता है। सहकर्मियों के साथ किया गया मीनिंगफुल और माइंडफुल संवाद काम-काज के लिए पॉजिटिव परिवेश बनाता है, जिसके चलते लोगों का दिल जीतने के साथ-साथ कामयाबी भी आपके हिस्से आती है। मन जीतने के इन सभी मोर्चों पर अच्छी भाषा सबसे ज्यादा मायने रखती है। असल में देखा जाए तो सकारात्मक शब्दों और सभ्य बोलचाल के प्रभाव का यह सिलसिला इंटरव्यू से ही शुरू हो जाता है। बावजूद इसके युवाओं की अजीबो-गरीब भाषा शैली आज चिंता का विषय बन गई है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों में भी सामने आया है कि आमतौर पर युवा बेझिझक अपशब्दों का इस्तेमाल करते हैं। इस बर्ताव के पीछे मौजूद साइकोलॉजिकल कारण बताते हैं कि आज की युवा पीढ़ी बोलने या करने से पहले कुछ नहीं सोचती। साथ ही वे इस बात से भी प्रभावित नहीं होते कि कोई उनके बारे में क्या सोचेगा? या उनके बोले शब्दों का किसी पर क्या प्रभाव पड़ेगा? सच्चाई यह है कि जीवन का कोई पक्ष, अशिष्ट शब्दों के नकारात्मक असर से नहीं बच पाता है। जरूरी है कि युवा आज के दौर में बढ़ती शाब्दिक अभद्रता की संस्कृति से बचें। दफ्तर में भावों, विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हुए संयत और सभ्य शब्दों का चुनाव करें। सधे व्यक्तित्व की सौगात देने वाला यह व्यवहार आपके लिए सदा ही बेहतरी के मार्ग खोलने वाला साबित होगा। *

इन दिनों आप अकसर बातचीत के दौरान अलग-अलग पीढ़ियों के लिए कुछ खास नाम सुनते होंगे, जैसे जेन एक्स, मिलेनियल, जेन जेड, बेबी ब्लूमर्स आदि। आपके मन में सवाल उठता होगा कि आखिर ये नाम कैसे रखे जाते हैं? इनकी क्या विशेषताएं हैं? आइए, इन सभी सवालों के जवाब जानते हैं।

एक-दूसरे से अलग-अनोखी है हर जेनरेशन की कहानी

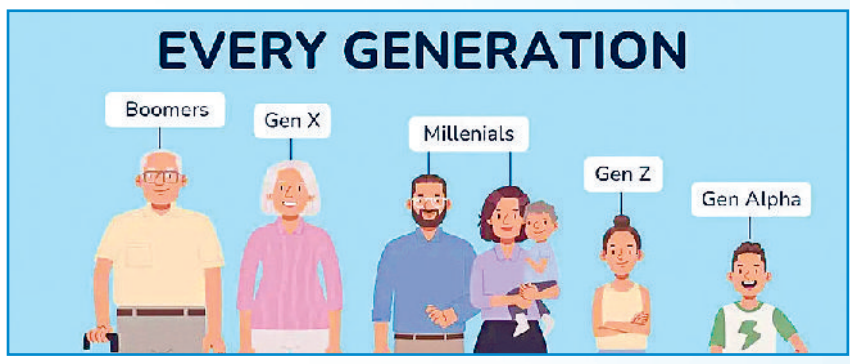

सोशल ट्रेंड
शिखर चंद जैन

एक समय तक आम चलन में नई और पुरानी पीढ़ी का ही जिक्र किया जाता रहा है। लेकिन अब अलग-अलग पीढ़ी को अलग नामों से भी जाना जाता है। इनका चलन हाल के सालों में तेजी से बढ़ा है।

कैसे तय होता है पीढ़ियों का नाम: पीढ़ियों का नाम तय करना, श्रमसाध्य, विचारपरक और कई चीजों पर आधारित एक जटिल प्रक्रिया है। यह एकेडमिक अनुसंधान, मीडिया के प्रभाव और सांस्कृतिक प्रभाव पर निर्भर करता है। जनसांख्यिक और समाजशास्त्री जनसंख्या सर्वेक्षणों, जन्म दरों और सामाजिक परिवर्तनों की पहचान के आधार पर ये नामकरण करते हैं। हां, इसे लोकप्रिय और प्रचलित करने का काम मीडिया का होता है।

नया ट्रेंड है पीढ़ियों का नामकरण: पीढ़ियों के नामकरण और श्रेणीबद्ध करने की परंपरा बहुत पुरानी नहीं है। 20वीं सदी की शुरुआत में इसका चलन शुरू हुआ है। इस वक्त जनसांख्यिकों और समाजशास्त्रियों ने जनसंख्या का विश्लेषण और सामाजिक बदलाव को दर्ज करना शुरू कर दिया था। पीढ़ियों के नाम महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक घटनाओं, विभिन्न आयु वर्ग की आदतों और समय विशेष पर आधारित होने लगे। अब आपको बताते हैं, अब तक की अलग-अलग पीढ़ियों के नामकरण के बारे में।

बेबी बूमर्स: वर्ष 1946 से 1964 के बीच जन्मे बच्चों को बेबी बूमर्स कहा गया। दरअसल, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक बेबी बूम आया था, जब दुनिया में जन्म दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। इस पीढ़ी ने 60 के दशक के बड़े सामाजिक परिवर्तन देखे। इसी दौरान कार्पोरेट जगत का उदय हुआ और और लोगों की जीवनशैली पर इस संस्कृति का खासा प्रभाव पड़ा। उस दौर के लोग आज सीनियर सिटिजन हो चुके हैं।

जेनरेशन एक्स: 1965 से 1980 के बीच जन्मे बच्चे, जेनरेशन एक्स कहलाते हैं। इस दरमियान समाज में कोई उल्लेखनीय और व्यापक परिवर्तन नहीं हुए। यद्यपि उस पीढ़ी के बच्चों ने पर्सनल कंप्यूटर का उद्भव होते देखा है। उस दौर के लोग अब मिड एज क्रॉस कर ओल्ड एज की ओर बढ़ रहे हैं।

मिलेनियल/जेन वाई: 1981 से 1996 के बीच जन्मे बच्चों को मिलेनियल कहा जाता है। उस पीढ़ी के लोगों ने 'मी जेनरेशन' या 'ईको बूमर्स' भी कहा जाता है। उस पीढ़ी को अपने में ही डूबे रहने, एकलवाद, डिजिटल टेक्नोलॉजी की जानकार और आर्थिक रूप से संपन्न माना गया। ये पीढ़ी मैटीरियल पजेजन से ज्यादा एक्सपीरियंस को महत्व देती थी।

जेनरेशन जेड: 1990 के मध्य से 2010 तक के दशक की शुरुआत तक जन्मी पीढ़ी को जेन जेड कहा जाता है। इस पीढ़ी को इसकी ग्लोबल कनेक्टिविटी और एंटरप्रेन्योरल स्पिरिट के लिए जाना जाता है। इन्हें कहीं-कहीं आई जेनरेशन और डिजिटल नेटिव्स भी कहा जाता है। इस पीढ़ी के बच्चे स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और सूचनाओं के त्वरित ग्रहण और उसे दूसरों तक प्रसारित करने के लिए जाने जाते हैं। ये पीढ़ी अभी युवावस्था से गुजर रही है।

जेनरेशन अल्फा: 2010 से 2024 के बीच जन्मे बच्चे जेनरेशन अल्फा के बच्चे कहलाते हैं। अल्फा 21वीं सदी की पहली पीढ़ी कही जा सकती है। यह पीढ़ी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऑगमेंटेड रियलिटी और स्मार्ट टेक्नोलॉजी के साए में जन्मी, पली और बड़ी हुई है। उनकी शिक्षा, खेलकूद, एंटरटेनमेंट सब कुछ टेक्नोलॉजी से अत्यधिक प्रभावित है। यह पीढ़ी अभी टीनएज से गुजर रही है। इसके बाद इसी साल एक जनवरी 2025 के बाद से जन्म लेने वाली पीढ़ी को जेन बीटा का मेंबर माना जा रहा है। इनके जीवन के हर पक्ष में तकनीक का जबर्दस्त प्रभाव दिखेगा।

एक पीढ़ी के गुणों में समानता: यह एक जटिल प्रश्न है कि क्या दुनिया भर में जन्मे एक पीढ़ी के लोगों में समानता होती है? यह काफी कुछ दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में घटने वाली घटनाओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, वातावरण एवं सामाजिक ढांचे पर निर्भर करता है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इंटरनेट युग में जन्मी ग्लोबल युवा पीढ़ी के बहुत सारे गुण और आदतें लगभग एक समान होते हैं। *

क्या है सैंडविच पीढ़ी

सैंडविच पीढ़ी का अर्थ मध्यम आयु वर्ग यानी 45 से 55 वर्ष के इर्द-गिर्द के व्यक्तियों से है। इन पर अपने बुजुर्ग माता-पिता और युवा बच्चों दोनों का भरण-पोषण करने की जिम्मेदारी है। सैंडविच पीढ़ी का नाम इसलिए रखा गया है, क्योंकि वे अपने बूढ़े माता-पिता की देखभाल करने के दायित्व और किशोरावस्था से युवा होते बच्चों की नई-नई फरमाइशों और चाहतों के बीच 'सैंडविच' जैसी स्थिति में होते हैं। ये कम ऊर्जावान, थके-थके से या बीमारियों से जूझने वाले हो सकते हैं। विभिन्न कार्य करने में असमर्थ हो सकते हैं या इनका वित्तीय रुप से अकसर हाथ तंग हो सकता है। इन्हें इस उलझन से गुजरना पड़ता है कि मां-बाप के लिए दवा और तीर्थाटन की व्यवस्था करें या बच्चों को महंगे गैजेट्स और ब्रांडेड कपड़े खरीदकर दें।

गजल
अब्दुल कलाम

हम अमर होते

सुबह शाम उनकी नजर होते
आइना काश हम अगर होते

तुरबतें अपनी भी बाकमाल होती
हम जो मीर, गालिब या जफर होते

खत में पता ही गलत था वरना
गए हम भी उनके शहर होते

बैठ जाते घनी छांव में थक कर
हमारे जीवन का जो तुम शजर होते

तुम्हारी याद में जीते और याद में
मर कर भी हम अमर होते

तुमने देखा ही नहीं उस रोज का अखबार
वरना हमारे हाल से तुम बाखबर होते

छोटी कहानी
सुनील कुमार महला

शर्मिंदा

ऑटो रिक्शा में अनिल के बगल में आकर वह व्यक्ति जैसे ही बैठा, उसने अपना एक हाथ अनिल के बैग पर रख दिया। अनिल ने उसे ऐसा करने से मना किया। लेकिन उस आदमी ने हाथ रखने की जो वजह बताई, अनिल खुद पर शर्मिंदा हो गया।

रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ा अनिल, बस स्टैंड जाने के लिए ऑटो रिक्शा का इंतजार कर रहा था। तभी एक ऑटो रिक्शा वाला तीस रुपए में बस स्टैंड जाने के लिए तैयार हो गया। अनिल ने अपने दो भारी-भरकम बैग ऑटो रिक्शा में रखे और स्वयं भी उसमें सवार हो गया। ऑटो रिक्शा में अनिल अकेला ही बैठा था। जब कोई अन्य सवारी ऑटो में बैठने नहीं आई तो उसने अपने एक बैग को ऑटो रिक्शा की सीट पर ही रख दिया, ताकि पैरों के पास सामान रखने से उसे ऑटो रिक्शा में बैठने में कोई दिक्कत-परेशानी न हो। शाम का समय था, ठंडी हवाएं चल रही थीं, इसलिए अनिल ने अपने चेहरे को मफलर से ढंक रखा था। ऑटो रिक्शा वाला अभी एक अन्य सवारी के इंतजार में था। थोड़ी देर में एक लंबा व्यक्ति, जो कंबल ओढ़े हुआ था, बस स्टैंड जाने के लिए उसी ऑटो रिक्शा के पास आया। ऑटो रिक्शा वाले ने उस व्यक्ति को भी ऑटो में बिठाया। वह लंबा व्यक्ति ऑटो रिक्शा में उस साइड में बैठ गया, जिधर सीट पर अनिल का सामान से भरा हुआ भारी-भरकम बैग रखा हुआ था। ऑटो रिक्शा में सवार होते ही कंबल ओढ़े हुए उस व्यक्ति ने अपना दायां हाथ बैग के ऊपर रख दिया और संभल कर बैठ गया। ऑटो रिक्शा वाला गंतव्य की ओर चल पड़ा। तभी अनिल ने ऑटो रिक्शा में बैठे उस व्यक्ति की ओर देखते हुए थोड़ा गुस्से में कहा, 'भाई साहब! जरा ध्यान से बैठें और हां, बैग को इतना दबाव देते हुए न पकड़ें। दरअसल, बैग में बच्चों के लिए कुछ टूटने वाला कीमती सामान रखा हुआ है और आपके हाथ के दबाव से इसमें रखा सामान टूट सकता है।'

कंबल ओढ़े हुए वह व्यक्ति अनिल की बात सुनकर एकदम से सकपका गया, उसने अनिल से कहा, 'अरे भाई साहब मुझसे गलती हो गई! मुझे नहीं पता था कि इसमें आपका कुछ टूटने वाला कीमती सामान रखा हुआ है। दरअसल, वो क्या है कि मेरा एक ही हाथ है न! ऑटो रिक्शा जब ऊबड़-खाबड़ सड़क पर तेजी से चलता है, तब एकदम से ऑटो रिक्शा में अपना बैलेंस बनाना मुश्किल होता है इसलिए, थोड़ा सहारा लेने के लिए, भूलवश मैंने आपके सामान से भरे बैग पर अपना हाथ रख दिया। इसके लिए मुझे माफ कर दीजिए, मैं बहुत शर्मिंदा हूं।' उस व्यक्ति की ये बातें सुनकर अनिल उसे एकटक देखता ही रह गया। दरअसल, अनिल ने कंबल ओढ़े व्यक्ति को ऑटो रिक्शा में बैठते समय एकबारगी देखा जरूर था, लेकिन उस व्यक्ति के कंबल ओढ़े रहने के कारण सुनील को इस बात का अहसास ही नहीं हुआ था कि जो व्यक्ति ऑटो में उसके साथ बैठा था, उसके एक ही हाथ है। अनिल अब अपने रूखे बर्ताव पर मन ही मन शर्मिंदा महसूस कर रहा था। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

मोहब्बत की दास्तानें

सारी दुनिया में मोहब्बत पर अब तक असंख्य कहानियां लिखी जा चुकी हैं। लेकिन यह ऐसा एहसास है, जिसे हर कोई अपनी तरह से महसूसता है, उसे बयां करता है। यह एहसास, वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय द्वारा लिखी गई पंद्रह प्रेम कहानियों के संकलन 'मितऊ' की कहानियों से गुजरते हुए और पुख्ता होता है। इन कहानियों में अलग-अलग उम्र और परिवेश के पुरुष और स्त्री के बीच पनपे प्यार के जज्बातों को पूरी संजीदगी से व्यक्त किया गया है। संग्रह की 'विकल्प' कहानी को अगर छोड़ दिया जाए तो अधिकतर में प्यार अपने अंजाम तक नहीं पहुंच पाता है। या कहें, सभी में अलग-अलग भावभूमि और जीवन-परिस्थितियों के आगे विवश, प्रेमी युगल विरह की टीस के साथ एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। इन कहानियों की विशेषता यह भी है कि इनके नायक-नायिकाओं में कहीं भी देहासक्ति नजर नहीं आती है, प्रेम की पवित्र भावना की गरिमा बनाए रखना उनके लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता है। इसे कई कहानियों में देख सकते हैं। फिर वो चाहे 'मेज नंबर सात' का लाइब्रेरियन हो या 'चौथे पहर का विरह गीत' का पत्रकार, प्रेम की मर्यादा को कभी नहीं लांघते हैं। यही इन कहानियों की खूबसूरती भी है, जो इन्हें बेहद पठनीय बना देती है। *

पुस्तक: मितऊ (कहानी संग्रह), लेखक: गोविंद उपाध्याय, मूल्य: 250 रुपए, प्रकाशक: न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

लघुकथा
गोविंद भारद्वाज

बदलते हुए मायने

अपने बेटे के लिए सोनाक्षी को देखने आईं सावित्री ने कहा, 'आपकी बेटी सोनाक्षी हमें बहुत पसंद है, बस अब आपकी हां की जरूरत है।'

'हमारी तो हां है बहन जी... इसलिए तो आपको लड़की दिखाने के लिए बुलाया है।' पार्वती ने खुश होकर जवाब दिया।

'तो देर किस बात की है... मुंह मीठा कराइए...' सावित्री ने तपाक से कहा।

इस पर पार्वती ने विनम्रता से कहा, 'बहनजी रिश्ता पक्का करने से पहले दान-दहेज की भी खुल के बात कर लें तो ठीक रहेगा... ताकि आगे चलकर संबंधों में कोई खटास न आए।'

'बात तो आप ठीक कह रही हैं। इस बारे में मेरी राय यह है कि दहेज से तो हमें सख्त नफरत है... हां रही दान की बात, आप जितना भी देंगे अपनी इकलौती बिटिया को देंगे... इससे हमें कोई ऐतराज नहीं होगा।' सावित्री ने अपने मन की बात कही।

इस पर सोनाक्षी के पिताजी ने अपनी धर्मपत्नी पार्वती को दूसरे कमरे में बुलाया और उनसे धीरे से कहा, 'देखा पार्वती... कितनी चालाक हैं ये... दहेज से नफरत है और दान से नहीं... बातों-बातों में शब्दों के हेर-फेर से दहेज लेने की बात भी कह दी।'

पार्वती बोली, 'तुम ठीक कह रहे हो सोनाक्षी के पापा... मायने में तो दान और दहेज कोई अलग-अलग शब्द नहीं हैं।'

'क्या बातचीत हो रही है हमारे समधी-समधन में...' सावित्री ने उन्हें फुसफुसाते देखकर बाहर वाले कमरे से पूछा।

'कुछ नहीं बस, हम दुनिया के बदलते हुए मायने पर विचार कर रहे थे।' पार्वती ने जवाब दिया। *

संयुक्त अरब अमीरात का दुबई शहर, पूरी दुनिया में अपनी खूबसूरती और आधुनिक सुख-सुविधाओं के लिए जाना जाता है। इसे खूबसूरत बनाने के लिए शहर की व्यवस्थित प्लानिंग, प्रशासनतंत्र और स्थानीय लोगों का सामूहिक योगदान है। कुछ समय से दुबई में रह रहे लेखक ने वहां की खासियतों को स्वयं अनुभव किया है। उसी को बयां कर रहे हैं अपनी जुबानी।

आधुनिकता-विविधता को समेटे शानदार-खूबसूरत शहर दुबई

बेमिसाल
जोगिंदर रोहिल्ला

दुनिया के कई देशों में रहने और काम करने का अनुभव मुझे मिलता रहा है। फिलहाल दुबई में हूं। इस शहर की कई विशेषताएं ऐसी हैं, जो इसे दुनिया भर से अलग बनाती है। यह शहर आधुनिकता, विविधता और स्वच्छता का अनोखा संगम कहा जा सकता है। इस शहर की सड़कों से गुजरते हुए, मुझे इसकी हरियाली, चमचमाती गगनचुंबी इमारतें और अनुशासित जीवनशैली बहुत प्रभावित करती है। 'हरियाली' शब्द पढ़कर आप चौंक तो नहीं गए! दुबई तो संयुक्त अरब अमीरात में है, जो रेगिस्तानी इलाके के रूप में जाना जाता है। तो यहां हरियाली कैसे? शुरू-शुरू में मुझे भी यही आश्चर्य हुआ था, लेकिन सच यह है कि यहां के बहुत से रिहायशी इलाके बहुत ही व्यवस्थित ढंग से हरे-भरे नजर आते हैं।

इमारतों-सड़कों का आकर्षणः दुबई अपनी गगनचुंबी इमारतों और अद्वितीय वास्तुकला के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। बुर्ज खलीफा, जो दुनिया की सबसे ऊंची इमारत है, दुबई की पहचान बन चुकी है। लेकिन यही नहीं इस शहर की लगभग हर ऊंची इमारत में कोई न कोई ऐसी खासियत है, जो इसे अलग बनाती है। ये खूबसूरत-गगनचुंबी इमारतें न केवल आधुनिकता का प्रतीक हैं, बल्कि इनसे दुबई का भविष्य भी झांकता दिखाई देता है। दुबई शहर की मुख्य सड़क शेख जायद रोड, जिसके दोनों ओर शानदार इमारतें हैं, ऐसा स्थान है, जो शहर की गतिशीलता और ऊर्जा को भी दर्शाती है। रात के समय इमारतों की जगमगाती रोशनी और सड़कों पर दौड़ती गाड़ियां अत्याधुनिक शहर का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती हैं।

मन मोहती स्वच्छताः दुबई में कदम रखते ही सबसे पहली बात, जो ध्यान आकर्षित करती है, वह है यहां की बेहतरीन स्वच्छता। चारों तरफ इतनी सफाई रहती है कि आप हैरान हो जाएंगे। मैं दुबई मरीना एरिया में कुछ दिन रहा और नोट किया कि सूरज निकलने से काफी पहले ही म्युनिसिपेलिटी के सफाई कर्मचारी अपने काम में लग जाते हैं और निश्चित करते हैं कि सफाई में कोई भी कमी न रहे। दुबई का हर कोना मानो, यह संदेश देता है कि स्वच्छता ही असली सुंदरता है।

सभी करते हैं नियमों का पालनः यातायात संबंधी कोई परेशानी यहां नजर नहीं आती है। सभी यातायात नियमों का पालन करते हैं। इन नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए कड़े दंड का प्रावधान है। उदाहरण के लिए अगर आप सड़क पार करते समय निर्धारित स्थानों का उपयोग नहीं करते हैं तो आपको स्थानीय 400 दिरहम (एईडी) का जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह न केवल लोगों को अनुशासित रहने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि शहर की स्वच्छता और सुरक्षा बनाए रखने में भी मदद करता है। बहुत सारे विकसित देशों की तरह ही दुबई में भी सड़क पर पैदल चलने वाले लोगों को प्राथमिकता दी जाती है।

सी-बीच के लाजवाब नजारेः दुबई के समुद्र तट भी इसकी खासियतों में से एक हैं। साफ-सुथरे और व्यवस्थित समुद्र तटों पर समय बिताना किसी जादुई अनुभव से कम नहीं होता है। मुझे विशेष रूप से दुबई की बीच लाइब्रेरी बहुत पसंद आई। समुद्र किनारे किताबें पढ़ने का अनुभव अनोखा और सुकून भरा होता है। यह न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि ज्ञानवर्धन का भी। इन तटों पर सुबह-सुबह की सैर और सूर्यास्त के समय का दृश्य मन को असीम शांति प्रदान करता है। दुबई स्थित मरीना बीच और जुमेराह बीच का साफ और व्यवस्थित वातावरण इसे और भी खास बनाता है। यहां आने वाले पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार के वॉटर स्पोर्ट्स का आयोजन भी किया जाता है, जो पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

दिखती है अनेकता में एकताः दुबई शहर की एक विशेषता, यहां विविधताओं का अनोखा संगम भी है। यहां 100 से अधिक देशों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। अलग-अलग संस्कृति, भाषा और परंपराओं के बावजूद यहां के लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। इतनी विविधता के बावजूद, दुबई एकता की मिसाल कायम करने वाला शहर है। यहां की दुकानों और बाजारों में विभिन्न देशों के व्यंजन और उत्पाद आसानी से मिल जाते हैं, जो इस सांस्कृतिक समृद्धि को और भी उजागर करते हैं।

हर जगह दिखती है सुचारु व्यवस्थाः दुबई की सार्वजनिक सेवाएं भी बेजोड़ हैं। यहां की मेट्रो सेवा, बस सेवा और टैक्सी सेवा इतनी व्यवस्थित है कि किसी को भी यात्रा करने में कोई दिक्कत नहीं होती है। यहां का सार्वजनिक परिवहन इतना सुविधाजनक है कि आप बिना किसी परेशानी के शहर के कोने-कोने तक पहुंच सकते हैं। स्वास्थ्य सेवाएं और सरकारी कार्यालयों की कार्यप्रणाली इतनी तेज और प्रभावी है कि समय का सम्मान हर जगह नजर आता है।

दुनिया के कई देशों में घूमने के बाद, दुबई ने मुझे यह सिखाया है कि जब विविधता, अनुशासन और स्वच्छता का संगम होता है, तो एक बेहतर शहर-समाज का निर्माण होता है। *

बेमिसाल है मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी

दुबई में कोई पुस्तकप्रेमी पर्यटक आए और मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी न जाए, यह तो हो ही नहीं सकता है। वैसे भी मैं दुनिया में जिस भी नए शहर जाता हूं, वहां की लाइब्रेरी जरूर देखता हूं। लेकिन मोहम्मद बिन राशिद लाइब्रेरी को देखकर यही कहने को दिल करता है कि ऐसी लाइब्रेरी कोई और नहीं है। इस लाइब्रेरी की बिल्डिंग भी बुक शेप्ड है। यहां टेक्नोलॉजी और किताबों को बहुत ही अच्छे तरीके से एक जगह पर संजोया गया है। इस लाइब्रेरी में विभिन्न विषयों पर बेशुमार पुस्तकें और उनके डिजिटल फॉर्मेट्स बुक लवर्स के लिए उपलब्ध हैं।

यादगार नए साल का स्वागत

इस साल दुबई में नए साल (वर्ष 2025) का स्वागत करना मेरे जीवन का एक यादगार अनुभव रहा। मरीना बीच पर आतिशबाजी का शानदार प्रदर्शन, संगीत और खुशियों की गूंज ने इस पल को अविस्मरणीय बना दिया। नए साल के मौके पर सड़कों पर उमड़ी भीड़ और हर चेहरे पर खुशी की चमक इस शहर की जिंदादिली का प्रतीक थी। उसे देखकर यही लगा कि यहां उत्सवप्रेमी लोग खुशी के हर अवसर को उल्लास से भर देते हैं।

सेल्फ मोटिवेशन
अतुल मलिकराम

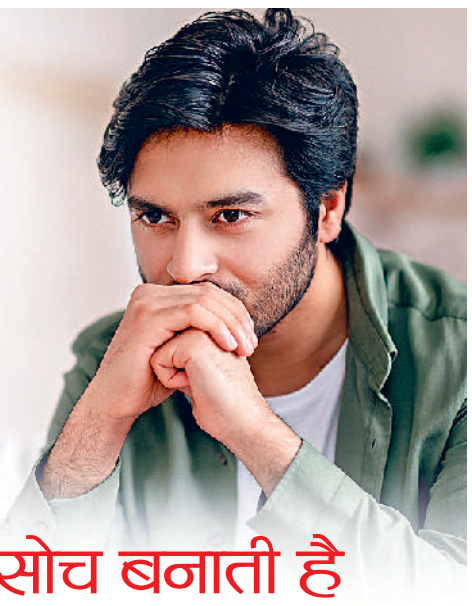

गरीबी केवल आर्थिक स्थिति नहीं होती है, यह एक मानसिकता का भी परिणाम होती है। जब तक हम अपनी सोच नहीं बदलते, तब तक अपनी स्थिति में बदलाव करना मुश्किल है। यह बदलाव कैसे संभव है, इसके लिए क्या जरूरी है, हमें जरूर जानना चाहिए।

पैसा नहीं सोच बनाती है हमें अमीर या गरीब

गरीबी, हमारे देश-समाज में एक ऐसी समस्या है, जिसे खत्म करने के लिए सबसे ज्यादा प्रयास किए गए। इसके लिए हर प्रकार की योजनाएं, कार्यक्रम और अभियान चलाए गए, फिर भी इस समस्या से छुटकारा नहीं पाया जा सका। इसका एक कारण यह है कि इस समस्या को केवल एक आर्थिक स्थिति मानकर ही इसका हल खोजा जाता रहा है, जबकि यह समस्या केवल आर्थिक अभाव की स्थिति नहीं है, बल्कि इससे बढ़कर यह एक मानसिक स्थिति भी है।

सोच रखती है मायनेः गरीब होना केवल पैसों की कमी का नाम नहीं होता है, बल्कि यह उस सोच का भी परिणाम है, जो किसी को गरीबी के जाल से बाहर निकलने से रोकती है। कई बार लोग गरीबी को केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं। उनके अनुसार, गरीबी मिटाने का समाधान केवल धन है। लेकिन, क्या सचमुच ऐसा है? यदि केवल आर्थिक मदद से गरीबी दूर हो सकती, तो अब तक दुनिया से गरीबी का नामो-निशान मिट चुका होता। लेकिन ऐसा नहीं हो सका है।

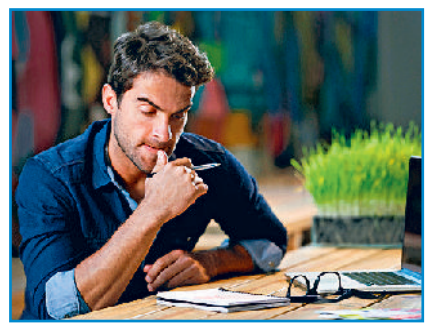

मानसिकता होती है जिम्मेदारः आर्थिक स्थिति के साथ-साथ गरीबी उस मानसिकता का परिणाम है, जिसमें इंसान अपने आप को परिस्थितियों का गुलाम मान लेता है। ऐसी सोच वाले लोग अपनी स्थिति को बदलने का प्रयास ही नहीं कर पाते। आपने कई बार देखा और सुना होगा कि कुछ परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी गरीब रहते हैं। इसका कारण केवल आर्थिक संसाधनों की कमी नहीं है, बल्कि वह मानसिकता है, जो उनकी हर पीढ़ी को विरासत में मिलती है। बच्चे अपने परिवार के वातावरण और सोच को आत्मसात कर लेते हैं। जब वे अपने माता-पिता को यह कहते सुनते हैं, 'हम तो हमेशा से गरीब हैं', या 'गरीबी के साए में पलना-बढ़ना ही हमारी किस्मत में है', तो उनके मन ही नहीं, बल्कि जीवन में भी यही विश्वास घर कर जाता है। और यही विश्वास फिर धीरे-धीरे उनकी सोच और व्यवहार का हिस्सा बन जाता है। इस प्रकार, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक यह मानसिकता हस्तांतरित होती रहती है और गरीबी नाम का यह साया और भी काला होता चला जाता है।

सही सोच से संभव है बदलावः गरीबी की कैद से बाहर निकलने के लिए केवल धन की आवश्यकता नहीं होती है। इसकी असली चाबी है सकारात्मक सोच और दृढ़ संकल्प। वे ही लोग गरीबी से बाहर निकल सके हैं, जिन्होंने सबसे पहले अपनी सोच और मानसिकता बदली। उन्होंने यह समझा कि गरीब होना स्थायी स्थिति नहीं है। वे समझते हैं कि यदि वे मेहनत करें, अपने हुनर को पहचानें और अवसरों का लाभ उठाएं, तो वे अपनी स्थिति को बदल सकते हैं।

आत्मविश्वास से बदलेंगे हालातः सोच के समृद्ध होने का मतलब केवल बड़े सपने देखना भर नहीं होता है। इसका मतलब है, हर चुनौती को अवसर के रूप में देखना और लगातार प्रयास करते रहना। साथ ही यह ठान लेना कि इस स्थिति से बाहर निकलना ही है। जब तक यह विश्वास नहीं होगा कि आप अपनी स्थिति बदल सकते हैं, तब तक कोई भी आपकी मदद नहीं कर पाएगा। इसलिए अपनी स्थिति सुधारने के लिए सबसे पहले मानसिकता बदलने की जरूरत है।

खुद पर विश्वास करना गरीबी से बाहर निकलने की पहली सीढ़ी है। जब आप यह मानेंगे कि आप बदलाव ला सकते हैं, तभी आप प्रयास करेंगे। ज्ञान और कौशल वह हथियार हैं, जिनसे आप किसी भी स्थिति से बाहर निकल सकते हैं। नए कौशल सीखें और अपने आप को बेहतर बनाने की दिशा में काम करें। अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं। नकारात्मक विचारों को त्यागें और हर समस्या में समाधान ढूंढने की आदत डालें। अगर हम अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं, अपने आप पर विश्वास रखें और अवसरों का लाभ उठाएं, तो हम गरीबी से बाहर निकल सकते हैं। *

फैशन ट्रेंड
विवेक कुमार

अगर आप ऐसी ड्रेस चाहते हैं, जो कंफर्टेबल होने के साथ-साथ आपको फैशनेबल और ट्रेंडी लुक भी दे, तो स्पोर्ट्स वियर या एथलीजर आपके लिए परफेक्ट च्वॉइस हो सकती है।

कूल फैशन का ऑप्शन एथलीजर-स्पोर्ट्स वियर

इन दिनों युवाओं में स्पोर्ट्स वियर और एथलीजर का क्रेज सिर चढ़कर बोल रहा है। स्पोर्ट्स वियर और एथलीजर वियर ऐसी ड्रेस होती हैं, जिन्हें खासतौर से स्पोर्ट्स या जिम एक्टिविटीज के लिए डिजाइन किया जाता है। मसलन जॉगर्स, ट्रैक पैंट्स, लेगिंग्स, क्रॉप टॉप्स, हूडीज, स्नीकर्स और जैकेट्स आदि। ये ड्रेसेस डेली यूज के लिहाज से भी कंफर्टेबल और स्टाइलिश होते हैं। यह फैशन आमतौर पर युवा ही कैरी करते हैं, क्योंकि इसे कैरी करने के लिए बॉडी फिटनेस और फ्लैक्सिबिलिटी बहुत जरूरी है, तभी ये बेस्ट अपीयरेंस देती है।

क्यों बढ़ रहा है क्रेजः हाल के सालों में युवाओं में फिटनेस को लेकर क्रेज बढ़ा है, ज्यादा से ज्यादा यंगस्टर्स वर्कआउट करते हैं। आज के फिटनेस फ्रीक यंगस्टर्स ऐसी ड्रेस चाहते हैं, जो कंफर्टेबल और फैशनेबल होने के साथ-साथ उनकी फिटनेस को शो-ऑफ भी करे। ये सारी क्वालिटीज उन्हें स्पोर्ट्स और एथलीजर वियर में एक साथ मिल जाती हैं। ये ड्रेस ग्लोबल और ट्रेंडी फैशन का हिस्सा हैं। चाहे बॉलीवुड या हॉलीवुड के सितारे हों, मशहूर खिलाड़ी हों, बिजनेस टाईकून हों या किसी भी क्षेत्र के कामयाब युवा हों, वे फिट और स्मार्ट दिखने के लिए आजकल स्पोर्ट्स वियर को फैशन की तरह कैरी कर रहे हैं, इसलिए भी ये ड्रेसेस युवाओं को बहुत पसंद आ रही हैं। वे खूब चाव से इन्हें पहनते हैं।

होते हैं कंफर्टेबल-मल्टीपर्पसः एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर हल्के, कंफर्टेबल और स्ट्रेचेबल फैब्रिक से बनाए जाते हैं। ये बॉडी के लिए ब्रिथेबल (सांस लेने योग्य) होते हैं, जिस कारण इन्हें लंबे समय तक पहना जा सकता है। साथ ही ये मल्टीपर्पस और मल्टीस्टाइल होते हैं। जिम, कैजुअल आउटिंग या ऑफिस के लिए भी ये उपयुक्त समझे जाते हैं।

हर प्राइस रेंज में अवेलेबलः मार्केट में हर प्राइस रेंज में एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर अवेलेबल हैं। डिफरेंट ब्रांड्स और क्वालिटी के हिसाब से 500 से 1500 रुपए के लोअर रेंज, 1500 से 5000 रुपए के मिड रेंज और 5000 रुपए से शुरू होने वाले हाई-एंड रेंज में आपको ये स्पोर्ट्स वियर या एथलीजर मिल जाएंगे।

जब कैरी करें स्पोर्ट्स-एथलीजरः जब भी आप एथलीजर या स्पोर्ट्स वियर कैरी करें तो फिटिंग का ध्यान जरूर रखें। अधिक लूज स्पोर्ट्स वियर अटपटे लगते हैं। ये हमेशा फिट होने चाहिए। हालांकि इतने टाइट भी न हों कि आप असहज महसूस करें। दूसरी जो बात सबसे ज्यादा ध्यान देने की है कि आपके स्पोर्ट्स वियर का मैटीरियल क्या है? वास्तव में ये स्वेट विकिंग यानी पसीना सोखने वाला होना चाहिए और ब्रीथेबल यानी सांस लेने में योग्य तो होना ही चाहिए। स्पोर्ट्स वियर को हमेशा जितना संभव हो सादगी से पहनें। ये कैजुअल आउटिंग के लिए ही ठीक हैं। कभी फॉर्मल इवेंट में इन्हें कैरी करके न जाएं।

इन बातों का भी रखें ध्यानः न्यूट्रल और मोनोक्रोम लुक्स (जैसे-ब्लैक, व्हाइट, ग्रे) वाले एथलीजर और स्पोर्ट्स वियर इन दिनों ट्रेंड में हैं। इन्हें कैरी करते समय अपने शूज का भी ध्यान रखना जरूरी है। इनके साथ आप हमेशा क्लीन और ट्रेंडी स्पोर्ट्स शूज या स्नीकर्स ही कैरी करें। स्पोर्ट्स वियर में लेयरिंग लुक भी खूब पसंद की जाती है। लेयरिंग लुक हुडीज, जैकेट्स आदि से मिलती है। लेयरिंग लुक स्पोर्ट्स वियर के साथ बेहतरीन और स्टाइलिश कॉम्बिनेशन बनाती है। जहां तक स्पोर्ट्स वियर के साथ एक्सेसरीज की बात है तो वाच, कैप या स्लिंग बैग जैसे हल्के एक्सेसरीज स्पोर्ट्स वियर को 'वॉव' लुक देते हैं। लेकिन ओवर ड्रेसिंग से बचना चाहिए। *

खास मुलाकात
पूजा सामंत

कुछ समय पहले नेटफ्लिक्स पर 'ब्लैक वारंट' वेब सीरीज रिलीज हुई है। इसमें जेलर सुनील कुमार गुप्ता के लीड रोल में जहान कपूर नजर आ रहे हैं। बीते दौर के मशहूर अभिनेता शशि कपूर के ग्रैंडसन जहान ने इस वेब सीरीज से जुड़े एक्सपीरियंस और एक्टिंग करियर से जुड़े सवालों के जवाब दिए इस बातचीत में।

मेरी पहचान वक्त के साथ आगे बढ़ेगीः जहान कपूर

जहान कपूर ने विक्रमादित्य मोटवानी के प्रोडक्शन में बनी वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' में जेलर सुनील कुमार गुप्ता का किरदार बहुत ही मैच्योर तरीके से निभाया है। हाल में पृथ्वी थिएटर में जहान कपूर से बातचीत हुई। पेश है इसके प्रमुख अंश-

हालिया रिलीज वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' में लीड एक्टर के तौर पर आपका सेलेक्शन कैसे हुआ?

'ब्लैक वारंट' की कास्टिंग मशहूर कास्टिंग डायरेक्टर मुकेश छाबरा ने की थी, उसमें मैंने भी ऑडिशन दिया। ऑडिशन के 2-3 महीने बाद मुझे विक्रमादित्य मोटवानी के ऑफिस से कॉल आया। मैं उस वक्त मकरंद देशपांडे के निर्देशन में 'सियाचिन' नाटक में मुख्य भूमिका निभा रहा था। विक्रमादित्य सर के साथ काफी बातचीत और 2-3 मीटिंग्स के बाद मुझे जेलर सुनील कुमार गुप्ता के रोल के लिए सेलेक्ट कर लिया गया।

जेलर सुनील कुमार गुप्ता का किरदार निभाने के लिए आपको किस तरह की तैयारी करनी पड़ी?

यह वेब सीरीज एक किताब 'ब्लैक वारंट : कंफेशन ऑफ ए तिहाड़ जेलर' पर आधारित है। इसे लिखा है खुद सुनील गुप्ता और सुनेत्रा चौधरी ने। मैंने सबसे पहले इस किताब को बारीकी से पढ़ा। मेरे रोल और लुक को लेकर काफी डिस्कशंस हुए। मूंछें पतली रखी जाएं या मोटी, बालों को कैसे रखा जाए, यूनिफॉर्म पहन कर कैसी चाल होगी, मेरा चलना शुरू में कैसे होगा, बाद में कैसे होगा? हर छोटी से छोटी बात पर ध्यान दिया गया। इस कहानी में मेरे किरदार के कई पहलू हैं। सुनील गुप्ता के मेंटल स्टेजेस को प्रेजेंट करना काफी मुश्किल था, किताब पढ़ने के बाद मुझे इसमें काफी हेल्प मिली। अब जब इस वेब सीरीज में मेरी एक्टिंग की खूब तारीफ हो रही है, तो बहुत अच्छा लग रहा है। इसका श्रेय मैं इस शो की पूरी टीम को दूंगा।

वेब सीरीज 'ब्लैक वारंट' के एक सीन में जहान कपूर

जेलर सुनील गुप्ता के किरदार से आप खुद को कितना रिलेट करते हैं?

यह सच है कि एक पारिवारिक संस्कारी युवक से सुनील कैसे गाली-गलौज करने वाले जेलर बन जाते हैं, कैसे कैदियों की फांसी देखते-देखते उनका दिल डेड जैसा हार्ड हो जाता है, इसे समझना बहुत मुश्किल था। जहां तक रियल लाइफ में सुनील कुमार गुप्ता के किरदार से रिलेट करने की बात है, तो मेरा फैमिली बैकग्राउंड उनसे पूरी तरह से अलग है। सिर्फ इतना कह सकता हूं कि सुनील की तरह ही मेरा स्वभाव भी सिंपल-सोबर है। मैं भी सुनील की तरह शांतिप्रिय और पॉजिटिव इंसान हूं।

क्या आपने अभिनय में आने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि कपूर परिवार के ज्यादातर लोग अभिनय से जुड़े रहे हैं?

यह सच है कि हमारे परिवार का लगभग हर दूसरा सदस्य एक्टिंग से जुड़ा है, लेकिन इसी वजह से मैंने भी यही राह पकड़ी ऐसा नहीं है। मेरी मां 'शोले' फेम निर्देशक रमेश सिप्पी की पुत्री शीना सिप्पी एक जानी-मानी फोटोग्राफर और पिताजी कुणाल कपूर एक्टर के साथ पृथ्वी थिएटर के एडमिनिस्ट्रेटर हैं। मुझे जब स्कूल में दाखिल किया गया तो सभी को अहसास हुआ कि मैं डिस्लेक्सिक हूं। मुझे पढ़ने में दिक्कत हो रही थी। मेरे मम्मी-पापा ने तुरंत इसका ट्रीटमेंट शुरू करवाया, तब जाकर मैं इससे बाहर निकला। इस वजह से मेरे करियर को लेकर बहुत ज्यादा प्लानिंग नहीं हुई। दसवीं क्लास के एग्जाम्स के बाद मैं पृथ्वी थिएटर से जुड़ गया। वहां बैक-स्टेज, सेट-डिजाइनिंग से लेकर प्रोडक्शन इंचार्ज तक, मुझे जो भी काम मिलता था, मैं कर लेता था। ग्रेजुएशन करने के दौरान ही मेरी मां ने मुझे एक एड एजेंसी में काम करने भेजा। मैंने इस एड एजेंसी में कॉपी राइटिंग, को-ऑर्डिनेशन से लेकर मॉडल शूट तक हर डिपार्टमेंट में काम सीखा। इन सबके बीच 'पृथ्वी थिएटर' के नाटकों में मेरा अभिनय भी चल रहा था। इसी तरह मुझे एक्टिंग से लगाव हुआ, और निर्देशक हंसल मेहता ने मुझे अपनी फिल्म 'फराज' में मौका दिया। इस तरह फिल्मों में बतौर एक्टर मैंने करियर बनाना डिसाइड कर लिया।

क्या कपूर परिवार का होने की वजह से आप प्रेशर भी फील करते हैं?

अभिनय की दुनिया में कपूर परिवार को सौ वर्ष हो चुके हैं। मैं शशि कपूर का पोता हूं। लोग आज कहते है मुझ में दादाजी (शशि कपूर) की छवि नजर आती है, यह सुनकर मुझे अच्छा लगता है, लेकिन उन्होंने जो महारत, जो मुकाम हासिल किया, क्या मैं वो क्या हासिल कर सकता हूं? पता नहीं! जाहिर-सी बात है मुझसे भी दर्शकों को कई उम्मीदें होंगी। मेरी तुलना लोग रणबीर, करीना, करिश्मा से भी करते होंगे। लेकिन इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता कि इंसान को आगे बढ़ने के लिए टैलेंट के साथ किस्मत का साथ होना निहायत जरूरी होता है। और इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हर किसी की किस्मत अलग ही होती है। हाथ की पांचों अंगुलियां एक समान होती हैं क्या? प्रतिभा है, पर मौके न मिलें तो प्रतिभा कैसे उजागर होगी? मैं कपूर खानदान से जुड़ा हुआ हूं, सिर्फ इसलिए घर पर बैठे-बैठे काम का इंतजार नहीं करता रहूंगा। मैं खुद कोशिशें करता रहूंगा। ऑडिशन देता रहूंगा। मुझे पूरा यकीन है कि मेरी पहचान वक्त के साथ आगे बढ़ेगी। *

घर में वे सिर्फ मेरे दादाजी थे...

अपने दादाजी (शशि कपूर) को जहान कैसे याद करते हैं, उनकी कौन सी फिल्में उन्हें पसंद हैं पूछने पर जहान बताते हैं, 'फिल्मी पर्दे पर तो वे शशि कपूर थे, द अल्टीमेट हैंडसम हीरो। लेकिन घर में मुझे प्यार करने वाले, वे सिर्फ मेरे दादाजी थे। मेरी अंगुली पकड़ कर मुझे आइसक्रीम खिलाने ले जाते थे। अकसर मुझे और मेरी सिस्टर शायरा को इंग्लिश फिल्म दिखाने ले जाते थे। बहुत सुनहरे दिन थे वो। जहां तक उनकी फेवरेट फिल्म की बात है तो दादाजी की हर फिल्म तो मैंने देखी नहीं, लेकिन 'दो और दो पांच', 'कलयुग', 'शर्मिली', 'दीवार', 'जूनून', 'आ गले लग जा' मेरी पसंदीदा फिल्में रही हैं।'